RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No. of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

सितम्बर, 2024

मूल्य : 15.00

उत्तर प्रदेश के सहकारी आन्दोलन का दर्पण

सहकारिता

हिन्दी मासिक पत्रिका

आपकी भाषा है
आपका बच्चा

विश्व पटल पर
छा रही हिन्दी

यू.पी. को मिला
एआईएफ एक्सीलेंस अवार्ड

शिक्षक, शिक्षा और
शिक्षार्थी

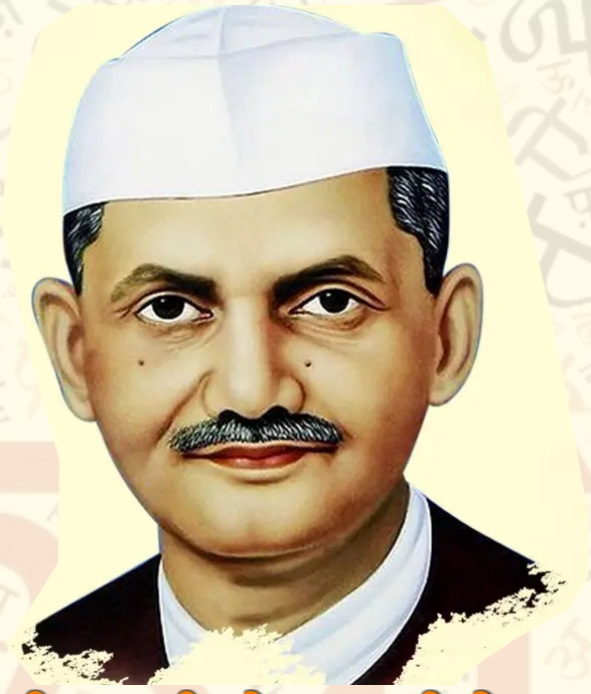

ईमानदारी और सादगी के
प्रतीक थे शास्त्री जी

xko&in'k ,o n'k&fon'k rd dh lgdkjh xfrfof/k;k dh tkudkjh gr i<

"सहकारिता"

(हिन्दी मासिक पत्रिका)

lgdkfjrk] lekt okn] df"k ipk;rhjkt ,o
xkeh.k fu;kstu dk Kku ni.k

"सहकारिता"

(हिन्दी साप्ताहिक समाचार पत्र)

lgdkjh xfrfof/k;k dh tkudkjh gr

सहकारिता पढ़िये, सहकारिता से जुड़िये

सहकारिता

वर्ष-62 अंक-03 सितम्बर, 2024

संरक्षक

अनिल कुमार (आई.ए.एस.)
आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता, उ0प्र0

श्रीकान्त गोस्वामी
प्रबन्ध निदेशक/प्रधान सम्पादक

सवीन्द्र सिंह
महाप्रबन्धक (प्रशा0,शिक्षा)

सुनील कुमार दिवाकर
प्रभारी सम्पादक

पवन कुमार वर्मा
आवरण एवं लेजर टाइप/प्रूफ रीडर

सदस्यता शुल्क :

एक प्रति : 15.00 रूपये
वार्षिक (बारह अंक) : 150.00 रूपये (डाक से)
आजीवन : 1500.00 रूपये

सदस्यता शुल्क व्यक्तिगत या बैंक ड्राफ्ट/चेक द्वारा सम्पादक ''सहकारिता'' यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0, 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) के पते पर भेजें।

सम्पादकीय कार्यालय :

यू0पी0 कोआपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) 226 001.
फोन नं0: 0522-4004577 मो0 नं0 : 9415094114
ई-मेल : sahkarita@gmail.com,

स्वत्वाधिकारी यू0पी0 कोऑपरेटिव यूनियन लि0, प्रकाशक, मुद्रक, सुनील कुमार दिवाकर द्वारा सहकारी प्रेस 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ (उ0प्र0) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रभारी सम्पादक - सुनील कुमार दिवाकर।

प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के हैं। इसमें सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृ0सं0
1.	सम्पादकीय	4
2.	क्या शहीदों का यही भारत है? - डॉ0 ओ.पी. मिश्र	5
3.	यूपी को मिला एआईएफ एक्सीलेंस अवार्ड	6
3.	विश्व पटल पर छा रही हिंदी - गौरी शंकर वैश्य ''विनम्र''	7
4.	पत्र के 27 गुण - प्रो. (डॉ.) भागचन्द्र जैन	10
5.	'बायोरॉक तकनीक : समुद्री जीवन हेतु संजीवनी' - डा0 दीपक कोहली	11
6.	मछली पालन और डेयरी पालन कर के कमाएं धन - बद्री प्रसाद वर्मा अनजान	14
7.	कल युग के रावण - उमेश शुक्ल	15
8.	ओ श्याम सलोने तुझे मीरा पुकारती - श्रीमती किरन कान्ती	15
9.	भारतीय कृषि एवं उद्योग पर पं0 दीनदयाल उपाध्याय के विचार - अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 'सन्नी'	16
10.	शिक्षक, शिक्षा और शिक्षार्थी - अखिलेश सिंह चन्देल	19
11.	मेघ हूं मैं ! - अयोध्या प्रसाद	21
12.	ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कीमतें - सीएमए गोविन्द शुक्ल	22
13.	'ली पड़ोसी की जान बेमकसद - नवीन शुक्ल 'नवीन'	24
14.	कब तक निहारेंगे गांव मुंह शहर का' - हरीराम यादव फैजाबादी	24
15.	विश्व ओजोन परत रक्षण दिवस - श्रीमती दीप माला सिंह	25
16.	ईमानदारी और सादगी के प्रतीक थे शास्त्री जी - अंकुर सिंह	28
17.	जीवन में उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है श्रेष्ठ विकल्पों का चयन - सीताराम गुप्ता	30
18.	हर कदम पर डूबती है जिंदगी - सारंग त्रिपाठी	32
19.	बड़ों के प्रेरक प्रसंग - चन्द्रकान्ता शर्मा	33
20.	शासकीय कार्यों में राजभाषा का उपयोग - श्रीमती कुसुम सिंह	34
21.	समझ-समझ का फेर - हरीश चंद्र पांडे	36
22.	अनमोल है माँ का प्यार - लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव	37
23.	आपकी भाषा है आपका बच्चा - मुग्धा	38
24.	भारतीय अर्थव्यवस्था में कृकृषि की भमिूका एवं महत्व - अनुराधा वर्मा	40
25.	यह जीवन एक, इमारत है। - संदीप पांडे 'शिष्य'	42

❑❑❑

सुनील कुमार दिवाकर

सम्पादक की कलम से

आज समय करवट ले रहा है। सूचना प्रोद्योगिकी से आयी क्रान्ति ने हिन्दी और भारतीय भाषाओं को आसमान पर बिठाने की ओर कदम बढ़ा दिया है। हिन्दी भाषा भाषियों की विशाल संख्या को देखते हुए आई टी क्षेत्र की बड़ी कम्पनियों ने हिन्दी के प्रति रूझान उत्पन्न कर दिया है। यह उनकी व्यावसायिक विवशता भी है। सूचना मनोरंजन और संचार से जुड़े लगभग सभी क्षेत्रों में हिन्दी को सम्बल मिला है। हिन्दी सॉफ्टवेयर्स का तेजी से विकास हो रहा है। सभी बड़ी-बड़ी साफ्टवेयर कम्पनियां इस ओर तेजी से काम कर रही है। माइक्रोसाफ्ट, लिनिक्स, आई0बी0एम0 ओरेकन आदि सभी प्रोसेसिंग तकनीकों में हिन्दी ला रही है। मोबाइल और इंटरनेट हिन्दी से पूरी तरह जुड़ चुके है। वैश्वीकरण के इस युग में हिन्दी तेजी से सम्पूर्ण विश्व में स्थान बना रही है। इससे युवा वर्ग को नयी उम्मीद बनी हैं। पहले हिन्दी भाषी युवाओं में हीन भावना रहती थी किन्तु आज हिन्दी के विस्तार से उन्हें आगे बढ़ने के अवसर स्प्ष्ट दिखाई दे रहे हैं। हिन्दी का पहला बेव दुनिया डॉट काम है जिस पर अनेक चैनल, ई-मेल साहित्य, व्यापार खेल आदि उपलब्ध है।

हिन्दी भाषियों की विराट संख्या बड़ी - बड़ी उपभोक्ता कम्पनियों के भविष्य की निर्णायक हो गयी है। इसीलिए हिन्दी पर इनके मालिकों की रोजी रोटी निर्भर है। आज टी.वी. रेडियो आदि सब विज्ञापन माध्यमों में हिन्दी का बोलबाला है। हिन्दी में विज्ञापन देना आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की विवशता है। इन कम्पनियों को यह आभास हो चुका है कि यदि भारत में पैर जमाना है तो हिन्दी की अनदेखी नहीं की जा सकती है। अंग्रेजी विज्ञापनों में भी हिन्दी का प्रयोग किया जाता है जैसे लाइफ हो तो ऐसी सिम्पलीसिटी में अद्भुत शक्ति हैं, शुक्र है आज की भाग-दौड़ की जिन्दगी में कुछ तो सिंपल है यही है राइट च्वाइस बेबी, आर्डर आर्डर अदालत का फैसला है यही है कम्प्लीट टूथपेस्ट पप्पू पास हो गया। ये कम्पनियाँ हिन्दी या स्थानीय भाषा के माध्यम से साक्षर और निरक्षर जनता तक आसानी से पहुँच जाती हैं। ● - सुनील कुमार दिवाकर

क्या शहीदों का यही भारत है?

डॉ0 ओ.पी. मिश्र,
डी.लिट (अर्थशास्त्र)
विद्या भूषण सम्मान–2014
अवन्तीबाई साहित्य सम्मान–2021
अखिल भारतीय साहित्य परिषद प्राप्त सम्मान–2023

परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने में असंख्य भारतीय (पुरूष और महिला दोनों) शहीद हो गए। उन्होंने कहा था-

हमारा वतन रहे शादकाम और आजाद।
हमारा क्या है हम रहे, रहे, न रहें।।

शहीद नहीं रहे। उनकी शहातुत रंग लाई। देश 14/15 अगस्त (अर्द्धरात्रि) को स्वतंत्र हो गया। आज देश को स्वतंत्र हुए 77 वर्ष हो गए। पिछले वर्षों में देश में जो कुछ हुआ वह शहीदों के सपनों का भारत नहीं है। अभी देश में अँधेरा है। सुख, शान्ति और समृद्धि का सबेरा नहीं आया है। देश ने पिछले दशकों में भौतिक/आर्थिक प्रगति की है किन्तु इस प्रगति का लाभ उन्हे ही मिला है जो पहले से ही सम्पन्न थे। जुम्मन और जगन जस के तस हैं। उन्हें आजादी का अर्थ अभी तक समझ में नहीं आया है। वे ही नहीं मध्यम वर्ग के पढ़े-लिखों का भी मत है कि जार्ज की जगह जगन्नाथ बैठ गया है। भौतिक/आर्थिक प्रगति का लाभ गरीबों को नहीं मिला। हमारे देश में दो देश हो गए हैं-इंडिया (अमीरों का देश) और भारत (गरीबों का देश) देश की कुल 80 प्रतिशत सम्पत्ति 20-25 औद्योगिक घरानों के पास है। शेष करोड़ों जनता के पास। दिल्ली, कोलकाता, मुम्बई की गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ, चौड़ी और चक्कती सड़के, सड़कों पर फर्राटा भरती लग्जरी गाड़ियाँ, पंचतारा होटल देश की आर्थिक प्रगति देश की आर्थिक प्रगति के सूचक नहीं हैं। असली भारत तो फुटपाथों पर और झोपड़ियों में आबाद हैं।

देश की जनसंख्या बढ़कर 140 करोड़ हो गई है। सरकारें जनसंख्या वृद्धि रोकने में असफल रही हैं। सत्ता पाने और सत्तासीन रहने के लोभ में दल और सरकारें इस्लाम धर्म को मानने वालों के प्रति परिवार नियोजन को लेकर कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर पाई। कभी उस धर्म के लोगों ने नारा लगाया था-

हँस के लिया है पाकिस्तान।
लड़कर लेंगे हिन्दुस्तान।।

इस धर्म के परिवारों में 8-10 बच्चों का होना लगता है उसी नारे को सफल बनाने का प्रयास है।

बेरोजगारी पहले से ज्यादा है। बेरोजगार भूखे हैं, निराश हैं। वे अपना और अपने बच्चों का पेट भरने के लिए रहजनी, डकैती, चोरी, स्मलिंग आदि अपराध करते हैं। इन अपराधों के पीछे उनकी लाचारी है, शौक नहीं। आर्थिक क्षेत्र के अतिरिक्त हम प्रतिरक्षा (डिफेंस) के क्षेत्र में कोई विशेष सफलता नहीं अर्जित कर पाए। चीन के पास हमारी जमीन है। क्या हम उसे ले पाए ? आतंकवाद का खात्मा करने में हम अभी तक सफल नहीं हो पाए। डींग मारने से कब्जाई जमीन वापस नहीं प्राप्त की जा सकती। भारत लगातार सिकुड़ रहा है।

सांस्कृतिक क्षेत्र में हम असफल रहे हैं। धर्म सम्प्रदाय हो गए है। मंदिरों के पास अकूत सम्पत्ति है। वहाँ विराजमान देवी-देवता के दर्शन करने की फीस है। भगवान को किस्तों में बेचा जा रहा है। धर्म धंधा हो गया है। 77 वर्षों के बाद भी हिन्दी राजभाषा नहीं है। हिन्दी बोलने वाले लगभग 65-70 करोड़ हैं। हिन्दी को राजभाषा न बनाकर अंगरेजी

यूपी को मिला एआईएफ एक्सीलेंस अवार्ड

❑ उत्तर प्रदेश को एआईएफ एक्सीलेंस में मिला द्वितीय पुरस्कार

❑ आईएएस अनिल कुमार सिंह ने कृषि मंत्री से ग्रहण किया पुरस्कार

नईदिल्ली में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य को एआईएफ एक्सीलेंस में द्वितीय पुरस्कार से नवाजा गया।

उत्तर प्रदेश के सहकारिता मंत्री जेपीएस राठौर के कुशल नेतृत्व व अथक प्रयासों से और प्रमुख सचिव (सहकारिता) राजेश कुमार सिंह के सकारात्मक मार्गदर्शन में कृषि अवसंरचना कोष उत्कृष्टता पुरस्कार में उत्तर प्रदेश राज्य ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। यह पुरस्कार कृषि

मंत्री भारत सरकार शिवराज सिंह चौहान द्वारा अपर आयुक्त सहकारिता आईएएस अनिल कुमार सिंह को प्रदान किया गया।

को उक्त पद पर बैठाए रखना क्या जनतंत्र (बहुमत) का अपमान नहीं हैं? भारत विश्व का अकेला देश है जो पराई भाषा से राजकाज चलाता है। हम भाषिक गुंलाम है। तुर्की जब आजाद हुआ तब अतातुर्क कमालपाशा ने दूसरे दिन से ही तुर्की को राजभाषा घोषित कर दिया।

शिक्षा की स्थिति भी संतोषप्रद नहीं है। शिक्षा के साथ सतत प्रयोग होने से शिक्षा उसी प्रकार गायब हो गई जैसे गांधी जी के द्वारा सत्य के साथ प्रयोग करने से सत्य गायब हो गया। लगभग 950 विश्वविद्यालय, हजारों महाविद्यालय तथा तकनीकी संस्थाएँ/संस्थान है। इनसे निकले विद्यार्थी न अपने लिए और न समाज के लिए उपयोगी है।

प्रथम/उच्च कोटि के विद्वान उक्त शिक्षा संस्थाओं ने कितने पैदा किए हैं ? क्या इनसे कोई आचार्य प्रसाद द्विवेदी, अमरनाथ झा बाबूराम सक्सेना, बलबीर साहनी, डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम आदि निकला है?

शिक्षा का ही अंग है खेलकूद। देश की विशालता को देखते हुए हम अच्छे खिलाडी और पहलवान नहीं पैदा कर सके। पेरिस के ओलम्पिक महोत्सव में आशानुकूल उपलब्धि नहीं मिल सकी। हमसे छोटे देश कई सोने और चाँदी के तमगे झटक चुके है। क्या यह हमारे लिए लज्जा का विषय नहीं है? प्रश्न है ''क्या हमने खेलों पर अपेक्षित धन व्यय किया? क्या खिलाड़ियों का चयन निष्पक्षतापूर्वक हुआ? क्या हमने विभिन्न खेलों के दक्ष और कुशल प्रशिक्षक नियुक्त किए? यह प्रश्न विचारणीय है। ❑

पता : 610/368 जी, केशवनगर,
सीतापुर रोड, लखनऊ-226020
मो0 : 9559419018

विश्व पटल पर छा रही हिंदी

- गौरी शंकर वैश्य विनम्र
पूर्व सीनियर पोस्ट मास्टर,
डाक विभाग

आज हिंदी विश्व पटल पर अपनी महती भूमिका निभाने के लिए सुसज्जित है। उसमें वैश्विक भाषा बनने की पूर्ण सामर्थ्य है। भारत की विकासमान अंतर्राष्ट्रीय स्वीकार्यता एवं ख्याति, हिंदी के लिए वरदान सिद्ध हुई है। आज हिंदी राष्ट्रभाषा की गंगा से विश्व गंगासागर बनने की प्रक्रिया में है।

हिंदी की सामर्थ्य का लोहा मान रहा विश्व

विश्व व्यवस्था को संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रयुक्त होने वाली हिंदी वर्तमान में विश्व के सभी महाद्वीपों और लगभग दो सौ से अधिक प्रमुख राष्ट्रों में राज कर रही है। आज वह बोलने वालों की संख्या के आधार पर विश्व की सबसे बड़ी भाषा बन गई है।विश्व के 50 से अधिक देशों में लगभग 500 केंद्रों पर हिंदी पढ़ाई जा रही है। अमेरिका में हिंदी यूएस नामक संस्था हिंदी के उन्नयन में उल्लेखनीय कार्य कर रही है। इस संस्था के प्रयासों से ही अमेरिका में दूकानों के साइन बोर्ड अब हिंदी में भी दिखने लगे हैं। पड़ोसी देश श्रीलंका, मारीशस, गुयाना,दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिदाद एंड टोबैगो,बर्मा, सिंगापुर, सूरीनाम,थाईलैंड, फिजी, नीदरलैंड, बांग्लादेश आदि देशों में भी हिंदी का वर्चस्व बढ़ा है।

टोक्यो विश्वविद्यालय के विद्वान प्रो. होजुमि तनाका के द्वारा प्रदत्त भाषाई आँकड़ों के अनुसार विश्व भर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम और हिंदी का द्वितीय स्थान है। डा. जयंती प्रसाद नौटियाल भाषा विज्ञानी के अनुसार विश्व में हिंदी जानने वालों की संख्या के आधार पर हिंदी प्रथम स्थान पर है और चीनी भाषा का स्थान द्वितीय है। आज संपूर्ण विश्व में हिंदी 64 करोड़ की मातृभाषा, 28 करोड़ लोगों की द्वितीय भाषा और 42 करोड़ लोगों की तीसरी या चौथी भाषा अथवा विदेशी भाषा है। आज हिंदी विश्व के 206 देशों में अंगीकार की जा चुकी है और उनके प्रयोक्ताओं की संख्या लगभग एक अरब चालीस करोड़ तक पहुंच गई है। गर्व का विषय है कि विश्व भर में 10 जनवरी को 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है और समय-समय पर 'विश्व हिंदी सम्मेलन' का आयोजन किया जाता है। इन आयोजनों से भी विश्व में हिंदी की गरिमा निरंतर बढ़ रही है।

विदेशों में प्रशिक्षित सेवाकर्मी बढ़ा रहे हिंदी का मान

हमारे देश के अनेक प्रशिक्षित एवं प्रतिभाशाली युवा विदेशों में अनेक क्षेत्रों में सेवाएं दे रहे हैं। उनके साथ हिंदी भी जा रही है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां बड़े पैमाने पर भारत में पूँजी निवेश कर रहे हैं। फलतः उनके लिए भी हिंदी का प्रयोग अपरिहार्य है। हिंदी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशासनिक, व्यावसायिक तथा वैचारिक गतिविधियों को चलाने वाली प्रभावशाली माध्यम बनी हुई है। हिंदी ने अपनी क्षमता के बल पर डिजिटल दुनिया में अँग्रेजी के एकाधिकार को समाप्त कर दिया है।

भावी पीढ़ी के लिए हिंदी भाषा बनेगी वरदान

हमारा देश में लगभग 65 प्रतिशत जनसंख्या युवाओं की है। इसलिए भारत को युवाओं का देश कहा जा सकता है। आज के युवा विद्यालयों.

महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षित-प्रशिक्षित हो रहे हैं। वे सन 2030 तक विधिवत प्रशिक्षित सेवाकर्मी के रूप में सेवाएँ देने के लिए विश्व के समक्ष उपलब्ध होंगे। ऐसी स्थिति में भारत के सबसे तरूण मानव संसाधन होने के कारण, उनकी मांग बढ़ेगी। भारत जब आर्थिक महाशक्ति बनने की प्रक्रिया में होगा, तब हिंदी भी विश्वमंच पर सक्रिय भूमिका का निर्वहन करेगी। हिंदी जिस गति तथा आंतरिक ऊर्जा के साथ अग्रसर हो रही है, इससे लगता है कि वर्ष 2035 तक विश्व का हर पाँचवा व्यक्ति हिंदी को बोलने और समझने में सक्षम होगा।

वैज्ञानिक लिपि के कारण है हिंदी समर्थ भाषा

हिंदी में साहित्य सृजन की परंपरा लगभग बारह सौ वर्ष पुरानी है। यह 8 वीं शताब्दी से लेकर 21 वीं शताब्दी तक गंगा की अविरल धारा की भाँति प्रवाहमान है। हिंदी साहित्य तो संस्कृत साहित्य के बाद विश्व के श्रेष्ठतम साहित्य की क्षमता रखता है। हिंदी के पास तीस लाख से अधिक शब्दों का विपुल भण्डार है और वह अन्यान्य भाषाओं के प्रयुक्त शब्दों को भी उदारतापूर्वक ग्रहण कर रही है। हिंदी विज्ञान. प्रौद्योगिकी, तकनीकी, चिकित्सा, कृषि, न्याय, अभियांत्रिकी, वैमानिकी एवं वाणिज्य आदि विषयों से संबंधित नए-नए शब्दों को गढ़ रही है। यहाँ तक कि अँग्रेजी भाषा के सामान्य बोलचाल में आ रहे शब्दों को भी स्वयं में समाहित कर लिया है।

देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता सर्वमान्य है। हिंदी और देवनागरी दोनों ही पिछले कुछ दशकों में मानकीकरण प्रक्रिया से परिमार्जित हुई हैं। नवीन स्थितियों को व्यंजित करने और बदलते चिंतन को स्थापित करने की क्षमता हिंदी भाषा में है।

मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई अब हिंदी में भी

यह तथ्य मानने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि अभी हिंदी में अँग्रेजी के स्तर की विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित पुस्तकें नहीं है, ज्ञान-विज्ञान से संबंधित विषयों पर उच्चस्तरीय कार्य किया जाना अभी शेष है, तथापि कुछ वर्षों से इस दिशा में उचित प्रयास हो रहे हैं। महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी माध्यम में एम. बी. ए. का पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। अब प्रतियोगी छात्र नीट-यूजी और जेईई मेन जैसी परीक्षाओं को अंग्रेजी और हिंदी सहित 11 अन्य भारतीय भाषाओं में भी परीक्षा दे सकते हैं और वे डाक्टर, इंजीनियर बनने की ललक पूर्ण कर सकते हैं। उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी सहित दूसरी स्थानीय भाषाओं में कराने की पहल की गई है।

मीडिया में भी हिंदी की धमक

आज 'इकोनामिक टाइम्स' और 'बिजनेस स्टैंडर्ड' जैसे समाचार पत्र हिंदी में प्रकाशित होकर हिंदी का जयगान कर रहे हैं। 'स्टार न्यूज' जैसे चैनल जो अँग्रेजी में आरंभ हुए थे, वे बाजारीय दबाव में पूर्णतः हिंदी चौनल में परिवर्तित हो गए। इसी प्रकार 'ई एस पी एन' और 'स्टार स्पोर्ट्स' जैसे खेल चौनल हिंदी में कमेंट्री देने लगे हैं। हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार में उपग्रह चौनलों, विज्ञापन एजेंसियों, बहुराष्ट्रीय निगमों तथा याँत्रिक सुविधाओं का विशेष योगदान है। वह जनसंचार-माध्यमों की सर्वप्रिय भाषा बन गई है। आज विश्व में सबसे अधिक पढ़े जाने वाले समाचार पत्रों में आधे से अधिक हिंदी के हैं। भारतीय उपमहाद्वीप ही नहीं, अपितु मारीशस, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन, जापान, कोरिया, मध्य एशिया, खाड़ी देशों, अफ्रीका, यूरोप, कनाडा तथा अमेरिका तक हिंदी कार्यक्रम उपग्रह चौनलों के द्वारा प्रसारित हो रहे हैं। इधर एफ. एम. रेडियो के माध्यम से हिंदी कार्यक्रमों का एक नया श्रोता वर्ग सृजित हो गया है। उसे ई-मेल, ई-कामर्स, ई-बुक, इंटर्नेट, एस एम एस एवं वेब जगत में बड़ी सहजता से पाया जा सकता है। इंटर्नेट के माध्यम से हिंदी के समाचार पत्र-पत्रिकाएँ दूसरे देशों में भी विभिन्न साइट्स पर उपलब्ध हैं। विगत पाँच वर्षों में

सोशल मीडिया पर हिंदी में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में लगभग सौ प्रतिशत की वृद्धि हुई है। पूरी दुनिया में ब्लागिंग और सोशल नेटवर्किंग, वेबसाइटों का जोर है। लगभग एक लाख तक हिंदी ब्लाग हैं, इससे हिंदी का तेजी से विकास हो रहा है।

माइक्रोसाफ्ट, गूगल, सन, याहू, आईबीएम तथा ओरेकल जैसी विश्व स्तरीय कम्पनियाँ व्यापक बाजार और भारी लाभ को देखते हुए हिंदी प्रयोग को बढ़ावा दे रही हैं।

विश्व के कई देशों में हिंदी की पत्रिकाएँ निकल रही हैं। इनमें 'सौरभ', 'विश्वा', 'विश्व - विवेक' (अमेरिका), 'विश्व हिंदी समाचार' 'इंद्रधनुष' 'वसंत' (मारिशस), 'शांतिदूत' (फिजी), 'प्रकाश,' 'विकास' (सूरीनाम), 'ज्ञानदा', 'आर्य ज्योति' (गुयाना), 'प्रवासिनी', 'हिंदोस्थान', 'पूर्वा', 'पुरवाई' (ब्रिटेन), 'भारती', 'जीवन ज्योति' (कनाडा), 'सोवियत नारी,' 'सोवियत संघ' (रूस), 'सर्वोदय' (जापान) इत्यादि उल्लेखनीय हैं। संयुक्त अरब अमीरात से वेब पर प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाएँ अभिव्यक्ति और अनुभूति पिछले 15 वर्षों से जनमानस को तृप्त कर रही हैं। हिंदी में ई-सहचर, जनकृति, हस्ताक्षर, रचनाकार, हिंदी नेस्ट, कविताकोश, संवाद इत्यादि सैकड़ों ई-पत्रिकाएँ अपनी वैश्विक मान्यता का उद्घोष कर रही हैं। हिंदी के अधिकांश समाचार पत्र भी गूगल पर ई-पेपर के रूप में उपस्थित हैं। विदेशों में 600 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का शिक्षण कार्य हो रहा है।

अँग्रेजी को चुनौती देते हुए हिंदी में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि, पर्यावरण, वाणिज्य आदि विषयों से संबंधित अनेक स्तरीय पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, जिससे पाठकों को गूढ़-ज्ञान सहज सरल भाषा में मिल रहा है, इनमें आविष्कार, विज्ञान प्रगति, विज्ञान संप्रेषण, विज्ञान आपके लिए, विज्ञान सेतु, प्रकृति मेल, जल चेतना, कुरूक्षेत्र, योजना, पर्यावरण डाइजेस्ट इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, जापान, रूस, आस्ट्रिया जैसे विकसित देशों में हिंदी के रचनाकार अपनी सृजनात्मकता द्वारा विश्व साहित्य को पल्लवित कर रहे हैं। हिंदी के शब्दकोश और विश्वकोश निर्मित करने में भी विदेशी विद्वान सहायता कर रहे हैं। हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण विश्व स्तर पर लोकप्रिय हुए हैं। प्रवासी भारतीय के रूप में विदेशों में रहकर अनेक हिंदी साहित्यकार हिंदी सेवा में रत हैं और उनकी हिंदी में पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आए दिन गूगल मीट के माध्यम से विदेशों के अनेक हिंदी साहित्यकार कवि गोष्ठी तथा विचार-विमर्श प्रस्तुत करते हैं।

मारीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना

विश्व के लगभग 200 देशों में फैले करोड़ों हिंदी भाषियों के लिए गर्व की बात है कि मारीशस की संसद ने 12 नवंबर 2002 को एक अधिनियम के द्वारा मारीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना की। यह सचिवालय हिंदी के वैश्विक प्रचार-प्रसार के लिए, उसे संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए अपना विशेष योगदान प्रदान कर रहा है।

इस सचिवालय के प्रमुख उद्देश्यों में सम्मिलित हैं -

- ❑ हिंदी में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, संगोष्ठी, समूह विचार - विमर्श, चर्चा एवं कवि सम्मेलन का आयोजन करना
- ❑ हिंदी विद्वानों के महत्वपूर्ण योगदान के लिए उन्हें सम्मानित एवं पुरस्कृत करना।
- ❑ विश्वविद्यालय में हिंदी पीठ की स्थापना करना।
- ❑ अंतरराष्ट्रीय हिंदी पुस्तकालय की स्थापना करना।
- ❑ अंतरराष्ट्रीय हिंदी पुस्तक मेला का आयोजन करना।
- ❑ हिंदी में शोध कार्य के लिए प्रलेखन (दस्तावेज) केंद्र की स्थापना करना।

हिंदी भाषा को भारतीय संविधान ने 14 सितंबर

1949 को सर्वसम्मति से भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृत किया। आज संपूर्ण भारत देश में दैनिक व्यवहारों में प्रांतीय भाषाओं के साथ-साथ हिंदी भाषा का बड़े पैमाने पर प्रयोग किया जा रहा है। सर्वप्रिय हिंदी रोजी-रोटी की भाषा बनी है। बैंक, रेलवे, प्रकाशन संस्था, क्रीड़ा विभाग, पर्यटन, कृषि, एयरलाइंस, दूतावास, अकादमी, आकाशवाणी, दूरदर्शन और पत्रकारिता के क्षेत्रों में विभिन्न पदों पर कार्य करने वाले हिंदी को अपना रहे हैं। यह विडंबना है कि सारे विश्व पर राज करने वाली हिंदी भाषा को हमारे देश में अभी राष्ट्रभाषा का स्थान नहीं मिल पाया है। इसके लिए सभी नागरिकों को अपने स्तर पर अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए कड़ाई से निर्देशित किया जाना चाहिए।

भारत सरकार हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के लिए 129 देशों के वोट प्राप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ में प्रयास कर रही है। विश्वास है कि क्रमशः इसमें हिंदी अप्रवास के अन्य देशों की सहायता हमें अवश्य मिलेगी और शीघ्र ही हिंदी विश्व भाषा होने का गौरव प्राप्त करके संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बन जाएगी।

हिंदी एक सबल, सक्षम और समर्थ भाषा है। विश्व स्तर पर इसकी पहचान है। इस भाषा में प्राचीन और आधुनिक विचारों के संवहन की अद्‌भुत क्षमता है, तथापि अपने देश में ही विज्ञान, तकनीक, न्याय एवं संचार के क्षेत्र में हिंदी की मानक शब्दावली को और विस्तारित किए जाने की आवश्यकता है। दूसरा महत्वपूर्ण अवरोध भारत में राजनीतिक लाभ की दृष्टि से हिंदी का जानबूझकर किए जाने विरोध की प्रवृत्ति त्यागनी होगी क्योंकि इससे वैश्विक स्तर पर इसकी गरिमा को ठेस पहुँचती है।

आने वाला समय हिंदी का है। हिंदी का एक सुदृढ़ पक्ष यह भी है कि यह विश्व बाजार की भाषा बन चुकी है। जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपयोगिता सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। हिंदी संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनने के लिए अपने कदम बढ़ा चुकी है, बस आवश्यकता है अपने घर में ही मान देने और दृढ़ इच्छाशक्ति प्रदर्शित करने की।

पता : 117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022
दूरभाष-09956087585

पत्र के २७ गुण

शीघ्र पत्रोत्तर देने वाले
सौम्य, सरल, सहज,
सजग, सतर्क, सम्पन्न,
समरस, सुशील, शाश्वत,
सहृदयी, सज्जन, सशक्त,
सद्‌गुणी, सहयोगी, सहायक,
सात्विक, सदाशयी, सदाचारी,
सराहनीय, संस्कारित, सृजनात्मक,
सुव्यवस्थित, सकारात्मक, सम्पर्कषील,
संवेदनशील, समसामयिक एवं सद्‌व्यवहारी
होते हैं, संचार के किसी माध्यम से पहुँच देने
वाले महानुभाव
सम्माननीय एवं साधुवाद के पात्र होते हैं। ❑

प्रो. (डॉ.) भागचन्द्र जैन,
उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय कृषि पत्रकार संघ (नाज)

पता : 20 महावीर नगर,
पोस्ट- रविग्राम, रायपुर- 492001 (छत्तीसगढ़)

'बायोरॉक तकनीक : समुद्री जीवन हेतु संजीवनी'

डा0 दीपक कोहली,
विशेष सचिव, नगर विकास,
उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ।
मो0 : 945410037

बायोराक तकनीक वह तकनीक है, जिसके माध्यम से समुद्र के नीचे चट्टानों जैसी सामग्री का निर्माण करके मूंगा चट्टानों को संरक्षित करने के लिए समुद्री जल को बहुत कम वोल्टेज विद्युत प्रवाह के माध्यम से पारित किया जाता है। समुद्री जल के माध्यम से सुरक्षित, कम-वोल्टेज विद्युत धाराओं को प्रवाहित करके, यह सफेद चूना पत्थर बनाता है जो मूंगा चट्टानों और उष्णकटिबंधीय जलवायु में सफेद रेत वाले समुद्र तटों पर पाए जाने वाले पदार्थ जैसा दिखता है। वास्तुकार प्रोफेसर वुल्फ हिल्बर्ट्ज ने सन् 1976 में समुद्र में प्राकृतिक निर्माण सामग्री बनाने के लिए बायोराक तकनीक नामक अनूठी प्रक्रिया बनाई। एकमात्र समुद्री निर्माण सामग्री जो बढ़ती है, उम्र के साथ मजबूत होती है और स्व-मरम्मत करती है वह बायोराक है। वुल्फ ने इसे सीक्रेट, खनिज अभिवृद्धि प्रौद्योगिकी या सीमेंट के रूप में संदर्भित किया। डा. टाम गोएरेउ, एक बायोजियोकेमिस्ट, ने 1987 में वुल्फ को कोरल रीफ बहाली के अनुप्रयोगों पर उनके साथ सहयोग करने के लिए जमैका में आमंत्रित किया। उन्होंने अपनी तकनीक का नाम बायोराक रखा क्योंकि इसने न केवल संरचनात्मक उद्देश्यों के लिए कठोर चूना पत्थर की चट्टान उगाई, बल्कि मूंगों और सभी समुद्री जीवों के विकास में भी काफी तेजी लाई।

बायोराक तकनीक का उपयोग समुद्र के

नीचे चट्टानों जैसी सामग्री का निर्माण करके मूंगा चट्टानों को संरक्षित करने के लिए किया जाता है। यह वह तकनीक है, जिसके माध्यम से समुद्री जल को बहुत कम वोल्टेज वाले विद्युत प्रवाह के माध्यम से प्रवाहित किया जाता है। परिणामस्वरूप जल में घुले खनिजों के क्रिस्टलीय लवण बनते हैं और वे जमा हो जाते हैं। जमा किए गए क्रिस्टल, जो मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट होते हैं, पानी के तल पर एक संरचना बनाते हैं जो प्राकृतिक रूप से बनने वाली मूंगा चट्टानों के समान होती है।

बायोराक निर्माण की प्रक्रिया में, समुद्री जल में रखे गए सकारात्मक रूप से चार्ज किए गए एनोड और नकारात्मक रूप से चार्ज किए गए कैथोड के बीच एक कम वोल्टेज विद्युत प्रवाह पारित किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप खारे पानी के इलेक्ट्रोलिसिस से कैल्शियम आयन और कार्बोनेट आयन उत्पन्न होते हैं जो कैथोड से जुड़कर कैल्शियम कार्बोनेट की एक परत बनाते हैं। इसे मूंगा चट्टानों और रेतीले समुद्र तटों के क्षेत्र में लगाया जाता है जहां कैल्सीनेशन नई संरचनाएं

बनाता है और मूंगा लार्वा उनसे जुड़ते हैं और तेजी से बढ़ते हैं। विभिन्न समुद्री प्रजातियों को अलग-अलग आकार और आकार के आवासों की आवश्यकता होती है ताकि कोरल, समुद्री घास, सीप और अन्य समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों सहित विभिन्न प्रजातियों के अस्तित्व और विकास में मदद करने के लिए बायोराक संरचनाओं को विभिन्न रूपों में बनाया जा सके।

बायोराक तकनीक समुद्री संरचनाओं का निर्माण करती है जो बहुत कठोर और टिकाऊ होती हैं।समय के साथ यह सख्त और मजबूत भी होता जाता है। यह किसी भी अन्य पानी के नीचे के निर्माण की तुलना में अधिक टिकाऊ है जो समय के साथ खराब हो जाता है और मरम्मत या प्रतिस्थापन की आवश्यकता होती है। बायोराक में स्व-मरम्मत की एक अनूठी विशेषता है जिसका अर्थ है कि कोई भी क्षतिग्रस्त या टूटा हुआ हिस्सा संरचना को बनाए रखने के लिए वापस बढ़ जाता है। बायोराक संरचनाएं समय के साथ ऊंचाई में बढ़ती हैं, जिससे उन पर मूंगे और सीप तेजी से बढ़ने लगते हैं। यह तटों की सुरक्षा में भी मदद करता है और समुद्र के स्तर में वृद्धि को देखते हुए द्वीपों को जलमग्न होने से बचाता है। बायोराक संरचनाएं लागत बचत की अनुमति देती हैं क्योंकि वे अन्य कंक्रीट या राक संरचनाओं की तुलना में निर्माण के लिए बहुत सस्ती हैं। बदलती जरूरतों के अनुसार सामग्री जोड़कर इन्हें पुनर्गठित किया जा सकता है। बहुत तेजी से और कम लागत पर वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए बायोराक का प्रभावी ढंग से उपयोग किया गया है। बायोराक संरचनाएं मूंगे को उसकी प्राकृतिक स्थिति की तुलना में 2-5 गुना तेजी से बढ़ने देती हैं। इंडोनेशिया में दुनिया की सबसे बड़ी मूंगा पुनर्जनन परियोजना है जहां बायोराक का उपयोग किया गया है।

बायोराक तकनीक उपयुक्त आवास प्रदान करके और पर्यावरण प्रदूषण के प्रतिरोध में सुधार करके प्रवाल भित्तियों के अस्तित्व और विकास को सुविधाजनक बनाती है। वे कुछ समुद्री प्रजातियों को क्षति से उबरने और तेज दर से बढ़ने में मदद

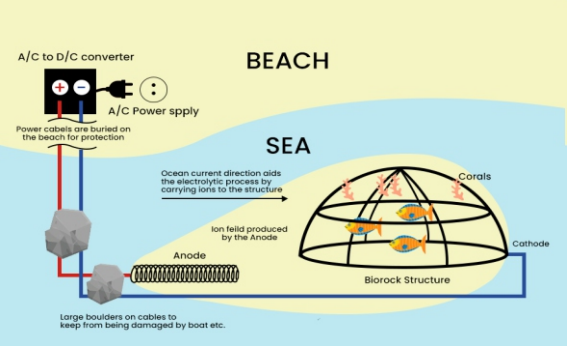

करते हैं। बायोराक प्रक्रिया समुद्री जीवन के विभिन्न रूपों के लिए आदर्श स्थितियाँ बनाती है जो जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण के खतरे में हैं। बायोराक रीफ्स पर उगने वाले मूंगों के जीवित रहने की संभावना अन्य क्षेत्रों की तुलना में बेहतर होती है।

बायोराक का लाभ सीमेंट जैसे कठोर चूना पत्थर या कैल्शियम कार्बोनेट से भरकर दरारें और क्षति की मरम्मत करना है। जलक्षेत्र में स्टील और कंक्रीट संरचनाओं को मजबूत करने में इसका उपयोगी अनुप्रयोग है। जिन संरचनाओं को खराब होने के कारण बदलने की आवश्यकता होती है, उन्हें बायोराक प्रक्रिया द्वारा बहुत कम लागत पर मरम्मत की जा सकती है। बायोराक तकनीक स्टील संरचनाओं की आंतरिक रूप से मरम्मत करती है और जंग लगने की समस्या का स्थायी समाधान करती है। यहां तक कि लकड़ी के ढांचे को भी बायोराक उपचार द्वारा संरक्षित किया जा सकता है।

बायोराक संरचनाओं का उपयोग ब्रेकवाटर के रूप में किया जाता है जो घर्षण बल का उपयोग करके भारी जल तरंगों को धीमा कर देता है। इससे तटों की सुरक्षा में मदद मिलती है क्योंकि लहरें इन संरचनाओं से कम बल के साथ गुजरती हैं और तटों के कटाव से बचती हैं। ये निर्माण लहरों को लगातार रेत को बहाकर ले जाने और समुद्री तटों को नुकसान पहुंचाने से रोकते हैं। बायोराक ब्रेकवाटर समय के साथ खराब नहीं होते और सख्त और मजबूत हो जाते हैं।

बायोराक तकनीक का उपयोग विशेष रूप से डिजाइन की गई संरचनाओं को तैयार करने के

लिए किया जाता है जो विभिन्न समुद्री प्रजातियों के अस्तित्व, विकास और स्वस्थ रहने की स्थिति को अनुकूल बनाती हैं। बायोराक सिस्टम मछलियों, झींगा मछलियों और अन्य समुद्री जीवों के लिए उपयुक्त आवास और भोजन प्रदान करके टिकाऊ जलीय कृषि के नए तरीके प्रदान करते हैं।

बायोराक दृष्टिकोण का उपयोग करने पर समुद्री घास के जीवित रहने और पनपने की अधिक संभावना है। यहां तक कि इसे कठोर चट्टान पर अपनी जड़ें विकसित करने और फैलाने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है जहां ऐसा करना आमतौर पर मुश्किल होगा। समुद्री घासें युवा मछलियों और शेलफिश के आवास का एक अनिवार्य घटक हैं। रेत को स्थिर करके, वे आवश्यक तट सुरक्षा सेवाएँ भी प्रदान करते हैं। विश्व स्तर पर, समुद्री घासें तेजी से नष्ट हो रही हैं, और बायोराक तकनीक उन्हें पुनर्स्थापित करने का सबसे तेज साधन प्रदान करती है।

बायोराक तकनीक की मदद से, नमक दलदली घास बहुत तेजी से बढ़ती और खिलती है और पानी की गहराई में भी जीवित रह सकती है जो सामान्य से अधिक गहराई में जीवित रह सकती है। परिणामस्वरूप, नमक दलदल में तेल रिसाव और प्रदूषण से संबंधित क्षति की शीघ्र मरम्मत की जा सकती है। नमक दलदल को समुद्र की ओर बढ़ाया जा सकता है और इसे सामान्य से अधिक गहराई तक बढ़ाया जा सकता है, जहां तटरेखा गायब हो रही है वहां भूमि जोड़ दी जा सकती है। हालाँकि दुनिया भर में नमक के दलदल तेजी से गायब हो रहे हैं, वे तटों की सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं और युवा मछलियों, शेलफिश और पक्षियों के लिए आवश्यक आवास के रूप में काम करते हैं।

बायोराक प्रौद्योगिकियाँ क्षतिग्रस्त मत्स्य पालन के पुनर्निर्माण के लिए आदर्श आवास बनाती हैं, विशेष रूप से नंगी रेत, मिट्टी या चट्टान पर, जहाँ युवा मछलियों को छिपने के लिए नर्सरी आवास प्रदान करने के लिए कोई चट्टान या समुद्री घास नहीं होती है। बायोराक परियोजनाओं के आसपास, मछली, सीप, मसल्स की आबादी होती है। झींगा

मछली, केकड़े और विशाल क्लैम तेजी से फैलते हैं, जिसके परिणामस्वरूप विशाल मछली समूह बनते हैं। इंडोनेशिया में मछुआरों ने बायोराक पहल के आसपास मछली की विविधता, आकार और मात्रा में वृद्धि देखी है।

व्यावसायिक रूप से मूल्यवान समुद्री प्रजातियों की आबादी, वृद्धि और स्वास्थ्य को बायोराक वातावरण द्वारा काफी बढ़ाया जाता है। उदाहरण के लिए, स्पाइनी लाबस्टर की आबादी बहुत बढ़ जाती है जब वे बड़ी संख्या में बायोराक लाबस्टर निवास स्थान में झुंड में आते हैं। अपने भोजन का उत्पादन करने वाले अत्यधिक विविध समुद्री पारिस्थितिक तंत्रों के तेजी से विकास के साथ, ये संरचनाएं टिकाऊ जलीय कृषि के लिए एक नया प्रतिमान स्थापित करती हैं जो प्रदूषण और महंगे आयातित फीड की आवश्यकता को समाप्त करती है।

उक्त से स्पष्ट है कि बायोराक तकनीक, समुद्री जीवन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण तकनीक है और समुद्र के लिए संजीवनी का कार्य करती है। यह तकनीक समुद्री निर्माणों के निर्माण के लिए एक लागत प्रभावी समाधान है, जो अन्य कंक्रीट निर्माणों के विपरीत, कठिन मौसम की स्थिति में भी स्थिर रहती है और क्षति का प्रतिरोध करती है। इन बायोराक संरचनाओं को उपयुक्त डिजाइनों में बनाया जा सकता है, जो मूंगा संरक्षण, समुद्र तट के कटाव को रोकने, समुद्री प्रजातियों की रक्षा करने और दीर्घकालिक स्थिरता के लिए प्रबलित संरचनाओं के निर्माण जैसी विशिष्ट आवश्यकताओं को भी पूरा करते हैं। ❑

पता : 5/104, विपुल खंड,
गोमती नगर, लखनऊ-226010
उत्तर प्रदेश
मोबाइल - 9454410037

मछली पालन और डेयरी पालन कर के कमाएं धन

आज सरकार डेयरी पालन और मछली पालन के काम के लिए किसानों को सरकारी ऋण दिया जा रहा है। इस रिण से आप गांव में अपन डेयरी फार्म और तालाब पोखरे में मछली पालन कर के अच्छी कमाई कर सकते हैं। साथ ही सरकार से लिया रिण भी समय से चुका सकते हैं।

आज गाय भैंस की दूध की मांग शहरों कस्बों और गांवो मे खूब बढ़ती जा रही है। दस बीस गाय भैंस रख कर आप एक मीनी तबेला खोल सकते हैं। आप का दूध घर बैठे बिक जाएगी। आज कल बड़ बड़ डेयरी उद्योग ग्रामीण क्षेत्र में अपने वाहन भेजकर किसानों के दूध खरीद रही हैं। आज शहरों और कस्बों में पाउच दूध दही की खूब मांग और खपत है। पाउच दूध दही एक सप्ताह तक खराब नहीं होता है।

आज देश में छोटे और सीमांत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए पैक्स जैसे सहकारी संगठनो का एक बड़ नेटवर्क बना रही है। ताकी किसानों को समुचित लाभ मिल सके।

आज पिछड़े तबके के किसानों को पर्याप्त वित्तीय मदद मिलने लगी है।

आज देश के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में अब 10000 से ज्यादा नई पैक्स डेयरी और मछली पालन समितियों का पंजीकरण हो चुका है।

आप थोड़ी अपनी पूजी और थोड़ी सरकारी पूजी से अपना कारोबार कर सकते हैं। आज देश में दुग्ध के मामले में हमारा देश सबसे बड़ दुग्ध उत्पादन देश बन चुका है।

श्वेत क्रांति के आने से देश में दुग्ध उत्पादन 23करोड टन से ज्यादा हो चुका है। वैश्विक दुग्ध उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी 24.64 प्रतिशत हो चुकी है।

डेयरी उत्पादन से आप को गोबर की खाद बनाने और बेचने से भी लाभ हो सकता है। आप चाहें तो अपना दूध दही पनीर खोवा घी तैयार कर के बाजार में बेच सकते है ।देश में डेयरी उत्पादन

— बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

का भविष्य उज्जवल नजर आ रहा है। आज डेयरी पालन कर के आप अपनी कमाई को बढ़ाकर आगे ले जा सकते हैं। डेयरी उद्योग में किसी तरह की घाटे की कोई गुंजाइश नही है।

आज ग्रामीण क्षेत्रों में मछली पालन का तेजी से विकास हो रहा है। जून के महीने में आप अपने तालाब और पोखरे की पुरी तरह से जलकुम्भी और घास पात की सफाई कर लें जुलाई आते ही बरसात शुरू हो जाती है और तालाब पोखरा बरसात के पानी से भर जाते हैं। तालाब पोखरा में पानी भर जानेके बाद आप उसमे मन पसंद मछली के बच्चे डालकर उसकी देखभाल करना शुरू कर दे। तालाब पोखरा में समय समय पर मछलियों के लिए उनके खाने का चारा डालते रहें। आप को नवंबर से जनवरी मार्च तक मछलियां मिलती रहेंगी। आप अपनी मछली को मछली मंडी में बेचकर अच्छा धन कमा सकते हैं। या फिर बाजार में अपनी दुकान लगाकर अपनी मछलियां बेच सकते हैं।

आज देश में मछली पालन में 2.8 करोड़ मछुआरों और मत्स्य किसानों ने मछली पालन का काम अपना चुके हैं।

भारत में 2014 के शुरूआती दिनों में97.79 लाख टन से बढ़कर 2023 तक बढ़कर मत्स्य उत्पादन 174 लाख टन तक पहुंच चुका है। आज देश में मत्स्य उत्पादन दिन दुनी रात चौगुनी विकास कर रहा है। इसे एक उद्योग के रूप में देखा जा रहा है। जो भविष्य के लिए सुखद सूचक है। ❑

पता : मीनू रेडियो श्रोत क्लब
गल्ला मंडी गोला बाजार 273408
गोरखपुर उ. प्र.। मोब0 : 9838911836

कल युग के रावण

- उमेश शुक्ल
(विद्यावाचस्पति)

त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाये।
कलयुग के रावण सभी, जो फिरते शीश उठाये।।
मंहगाई अन्याय का रावण, जी भर मन डरवाये।
अट्टहास कर डोल रहा, सबको खूब रहा सताए।।
क्यों न उसको फूंकते, जो जन-मन मौज मनाए।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाए।।
नारी के अपमान का रावण, मद में धुत्त दिखाये।
दुराचारियों का हाथ थाम, सज्जन जन भरमाए।।
सम्मान दिला दो नारी को, ये रावण फूंको आये।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाये।।
हिंसा वा अपराध का रावण, आगे कदम बढ़ाये।
बर्बरता संग द्वेष पूर्ण, क्यों जन-जन होता जाये।।
आज दिवस ये रावण फूंको, जग में शांती आये।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाये।।
भ्रष्टाचार आतंक का रावण, विभत्स हो डरवाये।
ऐठ के मूंछें ताण्डव करता, सब को नाच नचाये।।
जल्दी से यह रावण फूंको, जन-गण-मन हर्षाये।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाये।।
धर्म-जाति-आरक्षण रावण, हर घर घुसता जाये।
ताल ठोक हर घर को बांटे, जन-मन मैल बढ़ाए।।
फूंको आ के इस रावण को, धरती एक दिखाये।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाये।।
रावण जिनको राम हैं मारे, अब भी उसे जलाये।
जोगी रूप बन रावण घूमें, सब जन उन्हें मनाये।।
आ "उमेश" ये रावण फूंको, राम राज्य आ जाए।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाए।।
त्रेता का रावण ही सदा, क्यों हरदम फूंका जाये।
जब कलयुग के रावणसभी, फिरते शीश उठाये।।

एफ-4358 राजाजी पुरम, लखनऊ-226017, मो.-9616135035

ओ श्याम सलोने तुझे मीरा पुकारती

ओ श्याम सलोने तुझे मीरा पुकारती
पूजा नही है पूरी अधूरी है आरती
ओ श्याम सलोने तुझे मीरा पुकारती
मीरा ने तेरे वास्ते क्या कुछ नही किया,
पैरों में घुंघरू बांध कर नृत्य भी किया,
हर गीत तेरे प्रेम में मीरा है सानती। ओ श्याम सलोने.....
राणा ने दिया जहर उसने हंस के पी लिया,
क्या क्या न तेरे वास्ते दर्द सह लिया,
महलों का सारा सुख तेरे चरणों में जानती।
ओ श्याम सलोने.....
मीरा तुम्हारे नाम की दीवानी बन गयी,
राधे से ज्यादा वो कहीं परवान चढ़ गयी,
हर जन्म तेरे नाम पे मीरा है वारती। ओ श्याम सलोने.....

❑❑

श्रीमती किरन कान्ती
प्रशासनिक अधिकारी, (कम्प्यू0सेल)
कार्यालय आयुक्त एवं निबन्धक
सहकारिता,उ0प्र0, लखनऊ।

पता : 304 पिंक सिटी कालोनी,
बुद्धेश्वर चौराहा, मोहान रोड,
लखनऊ।
मो0 : 7071553009

भारतीय कृषि एवं उद्योग पर पं0 दीनदयाल उपाध्याय के विचार

अखिलेन्द्र प्रताप सिंह 'सन्नी'

भारत कृषि प्रधान देश है। कृषि का विकास कृषकों के जीवन स्तर में सुधार, राष्ट्रीय आय में वृद्धि और उद्योगों के लिए कच्चामाल उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक है। पं. दीन दयाल उपाध्याय ने इन बातों को ध्यान में रखते हुए भारतीय अर्थ व्यवस्था में कृषि विकास एवं ग्रामीण विकास को प्राथमिकता प्रदान कराने पर बल दिया। अभी भी लगभग 70 प्रतिशत लोगों की आजीविका खेती से चल रही है लेकिन सरकारों ने कृषि की अनदेखी इस तरह की है कि अब लोग खेती और किसानी छोड़ रहे हैं।

भारत की मिट्टी की उर्वरा शक्ति भरपूर है लेकिन रासायनिक खादों के दुष्प्रभाव, सिंचाई के साधनों की कमी और उठते गिरते बाजार के चलते आज कृषि और कृषकों की स्थिति वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए। भारत में जैविक खेती की ओर रूझान बढ़ रहा है। खेतों में भी बहु फसली खेती होने लगी है। भण्डारण और वितरण में भी खामियां दूर होनी चाहिए। पं. दीनदयाल उपाध्याय द्वारा दिया गया खेतों और अन्नदाताओं के हित को सर्वोपरि रखने का दर्शन ही औषधि जैसा लगता है।

प्रायः देश के बड़े भूभाग पर सूखे की स्थिति का सामना करना पड़ता है। मानसून की अनिश्चितता व उसके आसामान्य बर्ताव से लाखों किसानों की फसल बर्बाद हो जाती है। सरकार अपने तरीके से सूखे से निपटने का प्रयास करती है लेकिन प्रकृति के सामने वह भी लाचार है। भारत में कृषि की निर्भरता लम्बे समय से प्रकृति पर रही है। पहले, देश के विभिन्न राज्यों में शासक सिंचाई के लिए ऐसी व्यवस्थाएँ किया करते थे ताकि कम वर्षा की स्थिति में अकाल न पड़े, लेकिन विदेशी आक्रमणकारियों के शासनकाल में इन व्यवस्थाओं को तहस नहस कर दिया गया।

इस स्थिति को अब से पांच दशक से भी अधिक पहले युगदृष्टा पं. दीनदयाल उपाध्याय ने भाप लिया था। उन्होंने सिर्फ मौसम की अनिश्चितता का ही नहीं, बल्कि खेतीबाड़ी से जुड़े अन्य महत्वपूर्ण विषयों का भी इतनी गम्भीरता व विस्तार से अध्ययन किया कि उस समय के विशेषज्ञ भी चौक गए थे। कृषि के बारे में यदि उनके दर्शन को एक वाक्य में परिभाषित करना हो तो वह है 'अदैव मात्रिकाकृषि' यानी कृषि की ऐसी व्यवस्था जो पूर्णतया प्रकृति पर निर्भर न हो। आज हम उसकी आवश्यकता कितनी तीव्रता से अनुभव कर रहे हैं, यह कहने की नहीं, देखने की बात है।

आज देश में कृषि उत्पादकता में ठहराव आ गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भी देश लगभग ऐसी ही स्थिति से जुझ रहा था। तबकी सरकार अपने देश की समस्याओं का हल विदेशी मॉडलों में ढूँढने का प्रयत्यन कर रही थी। जबकि दीनदयाल जी ने इसका हल ढूँढने का प्रयास अपने चिंतन में

किया। उन्होंने कहा कि भारत की कृषि मुख्यतया इन्द्रदेव की कृपा पर निर्भर करती है। वर्षा का चार्ट ही भारत के किसानों का 'कार्डियोग्राफ' (दिल की धड़कन) है। यद्यपि यहाँ वर्षा के महीने निश्चित हैं फिर भी कहाँ, कब और कितनी वर्षा होगी इसके सम्बन्ध में निश्चित बताना कठिन है।

पं. जी सिंचाई के साधन के रूप में छोटी योजनाओं को ही अधिक उपयोगी मानते थे। उनका कहना था कि बड़े बाँधों की योजनाएँ पूँजी प्रधान है। उन्होंने बाकायदा एक तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से प्रमाणित किया कि खाद्य उत्पादन के मामले में भी बड़ी योजनाओं के मुकाबले छोटी योजनाएँ अधिक लाभकारी रही है। बड़ी योजनाओं की सबसे बड़ी खराबी यह है कि वे थोड़े दिनों में भूमिगत जल की ऊँचाई बढ़ाकर खेतों और आबादी को नुकसान पहुँचा देती है। भूमि का क्षार भी तल पर आ जाता है, जिससे जमीन बंजर एवं अनुउपजाऊ हो जाती है। यह बात इतने वर्षो बाद अब दुनिया भर के पर्यावरणविद् मानने लगे है। अब सरकारें छोटी परियोजनाओं की ओर ध्यान देने लगी है।

दीनदयाल जी का कथन था कि नए कुएं और तालाब बनाने के साथ-साथ हमें पुरानों को ठीक रखने तथा मरम्मत का भी विचार करना होगा। दीनदयाल जी का मानना था कि कृषि विकास का कार्यक्रम दो प्रकार का हो सकता है। (1) प्राविधिक यानी तकनीकी (2) संस्थागत। पहले कार्यक्रम का सम्बन्ध खेती की पद्धति से है। किन साधनों को तथा किस मात्रा में उपयोग किया जाय इसका विचार करना होगा। उन्हें भारतीय किसानों के देशी ज्ञान पर बहुत भरोसा था। इसलिए उन्होंने लिखा कि जहाँ तक खेती की पद्धति का सम्बन्ध है, भारत के किसानों ने परिस्थतियों के अनुरूप पद्धति का विकास किया है। युगों से चली आई पद्धतियों को आज की उन प्रक्रियाओं के पक्ष में अचानक नहीं छोड़ देना चाहिए। भारत का किसान फसलों की अदल-बदल कर बुवाई, हरी खाद का प्रयोग, मलमूत्र के खाद को पकाकर उपयोग करना, भूक्षरण रोकने के लिए मेड़ बाँधना तथा वृक्ष लगाना आदि अनेक विधियों को भली भाँति जानता है। उसने युगों से भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखा है। हाँ पिछले दिनों में विभिन्न कारणों से वह अपने ज्ञान का पूरा उपयोग नहीं कर पाया।

पशुपालन को वे कृषि का अंग ही मानते थे। दीनदयाल जी कहते थे कि गाय और भैंसों का उपयोग दूध के लिए होगा। किन्तु बैल यदि हमारे कृषि के उपयोग में नहीं आता तो भार बन जायेगा। पश्चिम के देश गोमांसभक्षी हैं। अतः वे बैलों को खा जाते हैं। किन्तु भारत के लिए यह कल्पना करना उसकी परम्परा एवं राष्ट्रभावना के प्रति अज्ञानमूलक एवं अव्यवहारिक होगा। बैल हमारे खेती की धुरी हैं। ट्रैक्टर लाकर हम अपना सब महल ढहा देंगे। आज के कृषि वैज्ञानिक इन सब चेतावनियों को दांतों तले ऊँगली दबाये महसूस कर रहे हैं। कृषि वैज्ञानिकों का एक बड़ा वर्ग अब खेतीबाड़ी की परम्परागत व्यवस्थाओं को ही भारत के अनुकूल मान रहा है।

आज पूरी दुनिया कीटनाशकों के जहर से त्रस्त है। रासायनिक उर्वरकों को लेकर भी सम्पूर्ण विश्व में बहस छिड़ी हुई है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने आज से पाँच दशक पूर्व ही देश के नीति निर्माताओं को चेताया था कि अन्न की उपज बढ़ाने के लिए तथा भूमि की उपजाऊ शक्ति को बनाए रखने के लिए खाद की आवश्यकता है किन्तु जमीनों का ठीक-ठाक सर्वेक्षण, उत्पादन की पद्धति, फसल, सिचांई के साधन आदि का विचार करके ही उसके उपयुक्त एवं योग्य मात्रा में खाद एवं उर्वरक का उपयोग होना चाहिए। उन्होंने 'अर्थ नीति' पर अपने दस्तावेज में कहा कि यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि लगातार रासायनिक उर्वरकों का यदि उपयोग किया जाए तो खेतों की उर्वरा शक्ति बढ़ने की बजाय कम हो जाती है। गाय का गोबर, मल-मूत्र आदि भारत के लिए अत्यन्त उत्तम खाद के साधन हैं। पाँच दशक से भी पहले उन्होंने उन्नत बीजों के सम्बन्ध में हमारे शासकों को चेताया था।

आज भी लगभग वह स्थिति बनी हुई है। दीनदयाल जी विदेशी ज्ञान अथवा तकनीकी के विरोधी नहीं थे लेकिन उनका मानना था कि हम विदेशों के परीक्षणों का लाभ अवश्य उठा सकते हैं। किन्तु अनुकरण नहीं कर सकते। हमें बाहर से प्राप्त ज्ञान के आधार पर अपने यहाँ अनुसंधान केन्द्रों में पहले परीक्षण करके अपने गाँव की परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में ही उसका उपयोग करना चाहिए। उन दिनों देश में सहाकारी खेती पर बहुत जोर देने का प्रयास चल रहा था। चीन से प्रेरणा लेकर इसे भारत की कृषि-समस्या का एकमात्र हल बताया जा रहा था। पं. जी ने कहा कि योजना आयोग तथा कांग्रेस सहकारी खेती पर बहुत जोर दे रहे हैं। लेकिन उनका मानना था कि सहकारी खेती हमारी प्रकृति और प्रतिभा के प्रतिकूल हैं। भूमि के प्रति किसानों का भारी लगाव है। यह कार्यक्रम क्रियान्वित नहीं हो सकता।

मानव की बुनियादी जरूरतों का सीधा जुड़ाव सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विषयों से होता है। एक आम मनुष्य का निजी एवं सार्वजनिक जीवन इन तीन कारकों से प्रभावित होता है। कभी उसे राजनीति प्रभावित करती है तो कभी समाज की रीति-नीति तो कभी अर्थनीति का प्रभाव होता है। लेकिन अगर सही मायने में देखें तो मानव मात्र के लिए ये तीनों ही परस्पर जुड़े हुए कारक हैं। एक आम मनुष्य की मूल जरूरतों की पूर्ति को ध्यान में रखते हुए इतिहास में अनेक विद्वानों द्वारा अनेक विचार दिये गये हैं। इसी श्रृंखला में एक बड़ा नाम जनसंघ के नेता, महान विचारक एवं चिन्तक पं. दीनदयाल उपाध्याय का भी है। राजनीति, समाज और अर्थ को मानव मात्र के कल्याण से जोड़ने का जो एक सूत्र पं. दीनदयाल उपाध्याय ने दिया, वह एकात्मवाद के दर्शन के रूप में विख्यात है।

पं. दीनदयाल जी ने अपने चिन्तन में आम मानव से जुड़ी जिन चिंताओं और समाधानों को समझने का प्रयास आज से दशकों पहले किया था, आज प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार द्वारा उन्हीं बातों को केन्द्र में रखकर सरकार की नीतियों का निर्माण किया जा रहा है। भारत और भारतीयता के संवाहक एवं संचारक के रूप में पं. दीनदयाल उपाध्याय के विचार किसी आदर्शलोक का दर्शन होने की बजाय व्यवहारिकता के धरातल पर बेहद मजबूती से टिकते नजर आते हैं।

पं. जी अन्त्योदय की बात करते थे। उनके मन में कतार के अंतिम व्यक्ति तक खुशहाली और समृद्धि का प्रकाश पहुँचाने की चिन्ता सदैव रही है। उनके वैचारिक दृष्टिकोण में जिस अन्त्योदय की अवधारणा का जिक्र आता है, यह समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति का सक्षम, सबल और स्वावलम्बी बनाने की उनकी चिन्ता का ही प्रतिफल था। पं. जी का स्पष्ट मानना था कि जो व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं होता है वह राजनीतिक रूप से भी स्वतंत्र नहीं होता है। आज सरकार आमजन को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाने की दिशा में जिन प्रयासों पर सतत् काम कर रही है वह वास्तव में इन्हीं विचारों से ओत-प्रोत नजर आते हैं। चूँकि भारत की अर्थव्यवस्था के मूल में कृषि है। इसलिए पं. दीनदयाल उपाध्याय कृषि सुधारों पर खास जोर देन की बात करते थे। वे कृषि में भारतीय कृषि के अनुरूप आधुनिकता का प्रवेश भी चाहते थे। ❑

पता : एस-2, 326 ई, राजर्षि नगर कालोनी,
भोजूबीर, वाराणसी-221002
मो.नं.-740890009

शिक्षक, शिक्षा और शिक्षार्थी

अखिलेश सिंह चन्देल
डायरेक्टर
तालुकदार कृषक फारमर्स प्रोड्यूसर्स कम्पनी लि.

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। शिक्षा के अनेकों आयाम हैं, जो राष्ट्रीय विकास में शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हैं। वास्तविक रूप में शिक्षा का आशय है ज्ञान, ज्ञान का आकांक्षी है- शिक्षार्थी और इसे उपलब्ध कराता है शिक्षक। तीनों परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। एक के बगैर दूसरे का अस्तित्व नहीं है। यहाँ शिक्षा व्यवस्था को संचालित करने वाली प्रबन्धन इकाई के रूप में प्रशासन नाम की नई चीज जुड़ने से शिक्षा ने व्यावसायिक रूप धारण कर लिया है। शिक्षण का धंधा देश में आधुनिक घटना के रूप में देखा जा सकता है। प्राचीन काल की ओर देखें तब भारत में ज्ञान प्रदान करने वाले गुरू थे अब शिक्षक हैं। गुरू के लिए शिक्षण अतीत से प्राप्त सूचना या जानकारी को आगे बढ़ाता है, जबकि गुरू ज्ञान प्रदान करता है। सूचना एवं ज्ञान में भी भिन्नता हैं। सूचना अतीत से मिलती है, जबकि ज्ञान भीतर से प्रस्फुटित होता है। गुरू ज्ञान प्रदान करता है और शिक्षक सूचना/शिक्षा विकास की कुंजी है। विश्वास जैसे आवश्यक गुणों के जरिए लोगों को अनु प्रमाणित कर सकती हैं। विकसित एवं विकासशील दोनों वर्ग के देशों में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका समझी गई है। भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर समय-समय पर बहस होती रहती है। इसे विडम्बना ही कहे कि हम आज तक सर्व स्वीकार्य शिक्षा व्यवस्था कायम नहीं कर सके। उल्लेखनीय है कि तमाम सरकारी प्रयासों के बावजूद आज 19 वर्ष की आयु समूह में दुनिया की कुल निरक्षर आबादी का लगभग 50 प्रतिशत समूह भारत में है। कहा जाता है कि तरूणाई देश का भविष्य है। राष्ट्र निर्माण में युवा पीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस सम्बन्ध में भारत की स्थिति अत्यधिक शर्मनाक और हास्यास्पद की मानी जा सकती है। देश में लगातार हो रहे नैतिक एवं शैक्षणिक पतन से हमारे युवा वर्ग पर सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। देश के विश्वविद्यालय प्रतिवर्ष बेरोजगार नौजवानों की फौज तैयार करते जा रहे हैं। किसी ने ठीक ही कहा है 'सत्ता की नाकामी राजनीतिक टूटन को जन्म देती है। हमारी राजनीतिक पार्टियाँ, जातियों में विघटित हो रही हैं। परिणामस्वरूप मानव समाज आत्मकेन्द्रित और स्वार्थ केन्द्रित होता जा रहा है। आज देश की राजनीति में काम और योग्यता का मूल्यांकन न होकर धन, बल और बाहुबल का बोलबाला है। लोकतन्त्र के गौरव और प्रतिष्ठा का प्रतीक हमारी संसद वैचारिक प्रवाह चिन्तन मनन की जगह, द्वेष, कलह, झूठी शान और दिखावे के स्वर उभरते नजर आते हैं। देश के कर्णधारों की कथनी करनी के बीच बढ़ते अन्तर ने मानव-मानव के बीच आस्था और विश्वास का संकट खड़ा कर दिया है। व्यावसायिकता की आँच से मानवीय संवेदनाएँ ध्वस्त हो रही हैं और हमारी कथित भाग्य विधाता शिक्षक समाज राष्ट्र में व्याप्त इस भयावह परिस्थिति को निरीह और असहाय प्राणी बनकर मूकदर्शक की भाँति देखने को विवश हैं। दुर्भाग्य से हमारे देश में समाज के सर्वाधिक प्रतिष्ठित और आदर प्राप्त शिक्षक की हालत अत्यधिक दयनीय और जर्जर कर दी गई है। शिक्षक शिक्षण छोड़कर अन्य समस्त गतिविधियों में संलग्न हैं। वह प्राथमिक स्तर का हो या विश्वविद्यालयीन इससे लोक सभा, विधान सभा, विधान परिषद सहित अन्य स्थानीय चुनाव, जनगणना, मतदाता बनवाना, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल अथवा अन्य श्रेणी के नेताओं के आगमन पर सड़क किनारे बच्चों की प्रदर्शनी लगवाने के अतिरिक्त अन्य सरकारी कार्य

सम्पन्न करवाए जाते हैं। देश की शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षकों की मौजूदा चिन्तनीय दशा के लिए हमारी राष्ट्रीय और प्रादेशिक सरकारें सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं, जिसने शिक्षक समाज को अपने हितों की पूर्ति का साधन बना लिया है। शिक्षा वह है, जो जीवन की समस्याओं को हल करे, जिसमें ज्ञान और काम का योग है? आज विद्यालय में विद्यार्थी अध्यापक से नहीं पढ़ते, बल्कि अध्यापक को पढ़ते हैं। वर्ष भर उपेक्षा और प्रताड़ना सहन करने वाले समाज के दीनहीन समझे जाने वाले आज के कर्मवीर, ज्ञानवीर, पराक्रमी और स्वाभिमानी शिक्षकों को 5 सितम्बर को राष्ट्रीय राजधानी सहित देश भर में सम्मान प्रदान कर सरकार 'शिक्षक दिवस' की औपचारिकता पूरी करती है।

अच्छे शिक्षक से शिक्षा पाए बिना हमारे अन्दर सद्विचार आना मुश्किल है। यह शिक्षा ही हमारे मानव जीवन में सद्विचारों को जन्म देती है। प्राचीन समय में शिष्य गुरूकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे। आज यह शिक्षा गुरूकुल से लेकर आलीशान भव्य भवनों में आ गई है। हमारे शिक्षकों को अपनी जिम्मेदारी को निभाना होगा, तभी राष्ट्र के यह कोमल फूल मजबूत हृदय को मजबूत करेंगे। विद्या ददाति विनयम्। अर्थात् विद्या नम्रता देती है जो जितना विद्वान होगा, वह सदैव नम्र होता है। शिक्षा के स्वरूप बदलते जा रहे हैं; लेकिन प्रतिस्पर्धा युग में मानव अपने दायित्वों को भूलता जा रहा है। शिक्षा से ही मानव जीवन का कल्याण हो सकता है। बिना शिक्षा के मानव की सफलता की परिकल्पना करना असम्भव सा प्रतीत होता है।

भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ0 सर्व पल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस (5 सितम्बर, 1888) को शिक्षक दिवस के रूप में मनाकर हम ऐसे प्रतिभाशाली शिक्षक को सम्मान देते हैं जिसने ज्ञानार्जन और ज्ञानदान के महान कार्य से राष्ट्र के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठा प्राप्त की। डॉ0 राधाकृष्णन भारत के अनेक महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में आदर्श शिक्षक की भूमिका निभाते हुए विद्यार्थियों के आदर्श और स्नेह पात्र बने रहे। विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में विदेशी विश्व विद्यालयों में अपने गहन ज्ञान की अमिट छाप वहाँ के छात्रों के मन मस्तिष्क पर भी अंकित करने में वे पूर्णतः सफल रहे हैं। 'शिक्षक दिवस' विद्यालयों की चाहारदीवारी के अन्दर सिमटकर रह जाने वाला औपचारिक समारोह नहीं है। इसे अधिकांश तिकड़मी और गिने-चुने सुयोग्य शिक्षकों को राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तर पर पुरस्कृत करने के समारोह तक ही सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। यह दिन देश-प्रदेश की बागडोर सम्भालने वाले राजनेताओं, बुद्धिजीवियों व शिक्षा से संबद्ध समस्त लोगों के लिए गम्भीर चिन्तन और आत्मनिरीक्षण का अवसर है। पूर्ण ईमानदारी और राष्ट्र के प्रति जवाबदेही के साथ शिक्षा की दशा और दिशा पर गहन मंथन की आवश्यकता है ताकि शिक्षार्थियों के लिए स्वस्थ और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा-व्यवस्था का निर्धारण हो सके। शिक्षा मात्र विविध विषयों की जानकारी या रोजी-रोटी कमाने के लिए व्यावसायिक कौशल हासिल करने तक सीमित न हो। यह विवेक को जाग्रत करने वाली, विश्लेषण की क्षमता विकसित करने वाली हो, तभी अच्छा-बुरा, उचित-अनुचित, नैतिक-अनैतिक का अन्तर समझते हुए शिक्षार्थी स्वयं तथा राष्ट्र व समाज के लिए कल्याणकारी पक्ष का चुनाव कर सकेंगे। 'सा विद्या या विमुक्तये'- सच्ची शिक्षा व्यक्ति के मन-मस्तिष्क का विस्तार करती है।

समाज शिक्षक से 'गुरू-शिष्य' के पवित्र और निःस्वार्थ रिश्ते की अपेक्षा करता है, उसे राष्ट्र निर्माता मानता है। अतः शिक्षक समुदाय को गुरूपद की गरिमा और गुरूत्व संवर्द्धित करने का संकल्प लेना होगा। निष्कलंक और अनुकरणीय आचरण की मूक भाषा शिक्षार्थी को अधिक प्रभावित करती है। शिक्षण शैली विद्यार्थी की आत्मा के लिए वैसी ही हो जैसे संगमरमर के टुकड़े के लिए शिल्पकला। सफल

शिक्षक पाठ्य विषय पर इस तरह प्रकाश डालता है कि वह विद्यार्थी को सुस्पष्ट और प्रिय लगने लगता है। मोमबत्ती की तरह जलते हुए शिक्षक दूसरों को तभी प्रकाश दे सकता है जब वह अनवरत अध्ययनशील और छात्र हित में चिन्तनशील रहे। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षार्थी में सम्पूर्णता सुप्तावस्था में पूर्व विद्यमान रहती है, शिक्षक का कार्य उसे जाग्रत तथा विकसित करना है।

मनुष्य जब जीवन का लक्ष्य पूर्णतः निर्धारित कर लेता है तो उसकी प्राप्ति के लिए वह निश्चयात्मक बुद्धि व समर्पण भाव से फल की चिन्ता किये बिना निष्काम कार्य करता है। इसके विपरीत जीवन का लक्ष्य चिन्हित करने में असफल व्यक्ति की बुद्धि अनिश्चयात्मक होती है और मन विभिन्न दिशाओं में भटकता रहता है। योग्य गुरू शिष्य की प्रतिभा पहचानकर उसे प्रखर करता है और उसे सही दिशा का दर्शन कराता है ताकि जीवन में सफलता की उच्चतर मंजित तक पहुँच सके। एक शिक्षक देश का राष्ट्रपति बन सकता है ऐसी कल्पना कम लोग ही करते हैं। लेकिन प्रतिभाशाली व्यक्ति हर क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बना लेता है। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन देश के पहले ऐसे अध्यापक थे जिन्होंने देश के सबसे सम्मानित राष्ट्रपति पद पर आसीन होने वाले एक आदर्श शिक्षक के रूप में जिया। एक महान शिक्षक होने के साथ ही वे एक महान दार्शनिक, वक्ता, विचारक, राजनयिक और प्रशासक भी थे। 1962 में राष्ट्रपति बनने के बाद अपने कुछ शिष्य और प्रशंसकों के निवेदन पर उन्होंने अपना जन्म-दिन 5 सितम्बर को 'शिक्षक दिवस' के रूप मनाने की स्वीकृति दे दी। उनका मानना था कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति पूर्ण समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ❑❑

पता : मकान नं0 24,
अयोध्याधाम कालोनी,
लक्ष्मणपुर, शिवपुर, वाराणसी
पिन-221003
मो0 : 7068991602

मेघ हूं मैं !

— अयोध्या प्रसाद

मेघ हूं मैं !
चातकों की बहुप्रतीक्षित
आस हूं मैं !
दादुर, मोर, पपीहे की
चाह हूं मैं !
घटा घनघोर देख, कृषक की
मुस्कान हूं मैं !
मेघ हूं मैं !
ताल, तलैया, पोखरों में,
अमृत सम, जल भरता !
सूखी, प्यासी धरती के,
कष्ट हरता, तृप्त करता !
चहुं ओर, हरियाली का,
मनभावन, चित्रण करता !
मेघ हूं मैं !
नभ अनंत, सराय सुहाना !
कर रहे, स्वच्छंद विचरण !
बादलों की तड़क भड़क !
दामिनी की चमक दमक !
बारिश की मधुर, मद्धिम
संगीत का, स्रोत हूं मैं !
मेघ हूं मैं !

❑❑❑

पता : म0नं0–551घ/506, नन्दनगर,
(निकट जय प्रकाश नगर)
आलमबाग, लखनऊ–226005 मो0– 8318926738

ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कीमतें

— सीएमए गोविन्द शुक्ल

भारत गांवों में बसते है, इसलिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को केंद्र में रखा जाना चाहिए। औद्योगिक विकास से अधिक ग्रामीण विकास पर ध्यान देना होगा। इसमें किसी को आपत्ति है,तो वह राजनैतिक कारणों और सामाजिक मुद्दों को उठाना चाहता है। लेकिन देश के विकास का अर्थ केवल विशेष क्षेत्रों का विकास नहीं है। सम्यक विकास व समानांतर विकास आपेक्षित है। सर्वांगीण विकास का आशय है कि आध्यात्मिक विकास भी भौतिक विकास की तरह हो। भारत के गांव अध्यात्म से निकट हैं। यहां के ग्रामवासी सरल,सहज और सकल हैं। वे बाहर से अधूरे लग सकते हैं,परन्तु अंदर से पूर्ण हैं। वे संस्कार, परम्परा और चरित्र के धनी हैं। इसलिए,देश के लिये मानव संसाधन का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत गांव ही है। वैसे भी देश में या विदेश में भारतीय अर्थशास्त्रियों ने उनकी महत्ता को स्वीकार किया है। गांवों के विकास के बिना भारत के विकास की कल्पना कठिन है। इसलिए,सरकारें पूरा ध्यान गांवों की ओर लगायें तो सम्पूर्ण देश का कायाकल्प संभव है,अन्यथा नहीं। गांववासी को भारत का प्रतिनिधि मानना चाहिए। क्योंकि गांववासियों की संख्या के साथ एक बड़ा वर्ग यहां उपेक्षित है। किसान तो शहरों में रहने लगे हैं,बड़े बड़े किसान तो महानगरों में रहते हैं और विदेश यात्राओं में व्यस्त रहते हैं। उन्हें किसानों की वास्तविक समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है,गांववालो से उनका लेना देना नहीं है। मध्यम किसान भी किसानों की राजनीति में पड़कर सक्रिय भूमिका निभाते हैं। ऐसे में, सिद्धांतों की बातें बेमानी हैं। किसान का आदर्श अब पहले जैसा नहीं रहा। वे दोनों हाथों में लड्डू रखना चाहते है। खेती का पूरा लाभ लेना चाहता है, और व्यापार में हिस्सेदारी भी। अनेक किसान तो बाकायदा व्यवसाय में संलग्न हैं। हालांकि, यह स्थिति नीतिज्ञों के लिये विचारणीय है। फिरभी, इसका प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। काम करना बुरी बात नहीं है,परन्तु अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार होना आवश्यक है। चरित्र में नीतिवान की अदृश्य भूमिका चिंता का विषय है।

'सरकार कुछ नहीं कर रही' यह कहना बिल्कुल गलत है। असल में सरकारें अपनी प्राथमिकताओं में उलझी हैं, उन्हें हित या नीति जैसे शब्दों में विरोध की दुर्गंध आती है। सो, ग्रामोद्धार का सपना पूर्ण नहीं होने वाला। आदर्श गांव की परिकल्पना दूर होती जा रही है। यहां राजनैतिक इच्छाशक्ति का अभाव है,बल्कि इच्छाशक्ति न व्यक्ति में है न संगठन में। भारत का दृष्य कुछ अलग है। यहां देश सेवा जैसी भावना न राज सेवकों में है,न लोक सेवकों में, न जन सेवकों में है। समाजसेवा भी धंधा हो गया है। आस्था की बातें तो किताबों तक सीमित हैं, प्रत्यक्ष में सेवा का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है। अर्थात,अब वातावरण वैसा नहीं रहा-जैसा कि स्वतंत्रता के पहले रहा था।

ग्रमीण अर्थव्यवस्था की चिंता किसे है, गांव के उत्थान में किसकी रूचि है। सब के सब शहरों की ओर दौड़ रहे हैं। गांवों से पलायन हो रहा है। विशेषरूप से प्रतिभा पलायन तो शत प्रतिशत हो रहा है। तब कौन संभालेगा गांवों की विरासत को? कौन आयेगा गांव में? कोई है, जो शहर से गांव में आने को तैयार हो? इसलिए, गांव के विकास की बातें तो नकली हैं। केवल चर्चा के लिये चर्चा होती है,न कि सुधार या विकास के लिये। तो,गांव की दशा में क्रांतिकारी परिवर्तन कभी नहीं होगा। शायद, कुछ लोग परिवर्तन होने भी न दें। क्योंकि परिवर्तन

न होना,उनके लिये लाभदायक है। इसी तरह कुछ लोग गांवों में शिक्षा व स्वास्थ्य का प्रचार प्रसार भी नहीं चाहते। यह विडंबना है,या त्रासदी है-इस पर सभी विचार करें। यहां,मेरा आशय यह है कि गांव की अर्थव्यवस्था में जो कारक हैं-उन पर पूरा ध्यान देना होगा। कृषि अर्थ व्यवस्था को ग्रामीण अर्थव्यवस्था से जोड़ कर देखना होगा, पृथक पृथक नहीं।

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था के संबंध में महात्मा गांधी से लेकर नरेन्द्र मोदी तक बार बार इहके सुदृढ़ीकरण पर बल देते रहे हैं। यह परम आवश्यक नहीं,अनिवार्य है। जब तक देश की ग्रमीण अर्थव्यवस्था अत्यंत मजबूत नहीं हो जाती,तबतक हम देश को पूर्ण विकसित नहीं बना सकते। इसलिए,बार बार कीमतों की बात होती है। आनाज या सब्जी आदि ही नहीं, समस्त ग्रामीण उपकरणों तथा व्यवस्थाओं से संबंधित चीजों की कीमतें क्षमता के अनुकूल हों। आजकल बड़े बड़े कारखानों से खेती के उपकरणों की सीधे आपूर्ति हो रही है। इनके दाम पंहुच के भीतर नहीं होंगे तो, विकास की संभावनाएं मंद पड़ जायेगीं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गति लाने के लिये अनेक उपाय किये हैं। लेकिन इसमें उद्योगपतियों को उचित मूल्य पर आवश्यक वस्तुओं को बाजार में उतारना होगा। सरकार अपनी नीतियों को सरल व स्पष्ट बनाये,तो बात आगे बढ़ सकती है। क्योंकि उद्योगपति और व्यापारी अपनी समस्याओं से सामना कर रहे होते हैं। दोनों का समाधान और सामंजस्य चाहिए, जो कठिन सा काम है। इसके पीछे अनेक कारण हैं। एक कारण तो ऐसा भी है,जो बताना ही अस्वाभाविक लगता है। वह है, कि शासक और प्रशासक के बीच विचारों का सेतु नहीं है,हालांकि क्रम है। अर्थात, प्रक्रिया है। सब कुछ वैसे ही हो रहा है,जैसा कि अंग्रेजो के समय होता था। इसमें परिवर्तन होना था, जो कभी नहीं हुआ। सम्भवतः होगा भी नहीं। ऐसी स्थिति बन गयी है, जिसमें प्रशासनिक तालमेल का अभाव है। गांव में रहने वाला ही गांव को अच्छी तरह समझ सकता है। गांव की समस्याएं बिल्कुल भिन्न हैं, शहर से बहुत विषम हैं। अब, कौन वहां रहकर या समझ कर अथवा स्वीकार कर नीति का निर्माण व संचालन कर सकता है। विशेष रूप से वस्तुओं की कीमत को नियंत्रित करने का कार्य अति विचारणीय है। सब कुछ भगवान के सहारे नहीं छोड़ा जा सकता। कर्त्तव्यबोध और उत्तरदायित्व ही हमें प्रेरणा दे सकता है।

उत्तर प्रदेश बड़ा राज्य होने के कारण अगुवाई कर सकता है। अन्य प्रदेश इसका अनुसरण करेंगे। तकनीकी व जटिल काम है,मूल्य निर्धारण। असल में,इसके लिये विधिक मार्ग भी चाहिए। कानून और नियम से ही पद्धति को तय किया जा सकता है। कीमत निर्धारण का तरीका और उन्हें निम्न स्तर पर स्थिर रखने की भी युक्ति होनी चाहिए। जिसके लिये तकनीकी जानकारों की आवश्यकता होगी। योग्यताधारी कुशल व्यवसायिकों का परामर्श संभव है। प्रबंधन के लोग हों या प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञ हों,सहयोग व समन्वय करना होगा। ग्रमीण अर्थव्यवस्था को संरक्षित करने के लिये कीमतों का विनियमित किया जाय। गांवों को विशेष दर्जा दिया जाय,या न दिया जाय-लेकिन यहां क्रय विक्रय से संबंधित वस्तुओं को राहत दी जा सकती है,मूल्यांकन करके कीमतें कम की जा सकती हैं। यह सैद्धांतिक विचारों है,जो प्रयोग की कसौटी पर उतरना चाहिए। भले ही इसके लिये संयुक्त प्रयास किये जाय।

कीमतों का प्रभाव समस्त जीवन पर पड़ता है। फिर यहां गांव तो गरीब हैं,अभावग्रस्त हैं। इसलिए, जिसप्रकार सभी सभी क्षेत्र सरकार से अपेक्षा रखते हैं, उसी प्रकार गांव भी विशेष सहायता की आशा रखते हैं। यह स्वाभाविक भी है। यदि किसी हद तक ग्रामीण अर्थव्यवस्था को तेजी से, मंहगाई से बचाया जा सके तो ग्रामीणों को प्रोत्साहित किया जा सकता है। गांवों से नवयुवकों का पलायन भी रोका जा सकता है। सरकार कीमतों के संबंध में कदम उठा सठती है। ❑

(लेखक कास्ट एकाउंटेंट और वीएसएसडी कालेज, कानपुर के शोध छात्र हैं।)

पता : 1/53, विनयखण्ड गोमतीनगर,
लखनऊ-226010

गज़ल

ली पड़ोसी की जान बेमकसद

- नवीन शुक्ल 'नवीन'

ली पड़ोसी की जान बेमकसद
तेरे मजहब का ज्ञान बेमकसद

जब गरीबों से वास्ता ही नहीं
फिर तो खैरात, दान, बेमकसद

आदमीयत का दर्द हो दिल में
सजदों के ये निशान बेमकसद

मुफलिसी तो दिखाई देती है
बन्द हैं तेरे कान बेमकसद

धर्म या कर्म कुछ नहीं है अगर
रामनामी जबान बेमकसद

देख किरदार में गिरावट है
जिन्दगी में उठान बेमकसद

आसपास अपने देख लीजे श्नवीनश
वरना सारा जहान बेमकसद।।

❑❑

पता : 227 विजय नगर, कानपुर रोड,
लखनऊ-226023
चलभाष : 8317062043, 9415094950

- हरी राम यादव फैजाबादी
भूतपूर्व सैनिक/स्वतंत्र लेखक

कब तक निहारेंगे गांव मुंह शहर का'

महोदय गांव को गांव ही रहने दो।
धरती पर पेड़ों की छांव रहने दो।
गांवों में ही विकसित हों सुविधाएं।
रहें न शिक्षा, चिकित्सा की दुविधाएं।
गांवों में ही बनें हाट और बाजार।
जहां फिर से चले विनिमय व्यापार।
बनें गांवों में ही बैठक और चौपाल।
जहां सभी कह सकें अपना हाल।
गांवों की हों एकदम चमचमाती सड़कें ।
हो वह व्यवस्था जिससे आग न भड़के।
लगें उद्योग धंधे सब, देश के गांवों में।
जिससे जाना न पड़े शहर की छावों में।
चल के जाए गांवों में व्यवस्था सरकारी।
दूर हो गांव से, दूर जाने की बीमारी।
आखिर गांव ही शहर के बाप दादे हैं।
शहर में तो बस बसते सरकारी प्यादे है।
कब तक निहारेंगे गांव मुंह शहर का।
कब तक आस देखेंगे सरकारी डगर का।
गांवों का विकास हो शहर से ज्यादा भाई।
गांवों में बहाओ हरी ठंढी हवा पुरवाई।।

❑

पता : सतगुरू पुरम कालोनी, चरन भट्ठा रोड,
निकट एस.जी.पी.जी.आई., लखनऊ
मो. -7087815074

विश्व ओजोन परत रक्षण दिवस (16 सितम्बर)

श्रीमती दीप माला सिंह
शिक्षिका
संत अतुनानन्द कान्वेंट स्कूल, वाराणसी

सन् 1994 से 16 सितम्बर को प्रतिवर्ष ओजोन परत के संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में सभी देशो में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह दिन न केवल उस तारीख जब मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किये गये थे उसे याद करने के लिए मनाया जाता है बल्कि मुख्य रूप से यह जागरूकता फैलाने के लिए भी मनाया जाता है कि ओजोन परत कितनी तेजी से कम हो रही है। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल दुनिया भर के हानिकारक पदार्थो और गैसों को समाप्त करके ओजोन परत की रक्षा करने हेतु एक अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि है। इस दिन को एक अन्तर्राष्ट्रीय अवसर के रूप में देखने का मुख्य उद्देश्य ओजोन परत के बारे में जागरूकता की भावना पैदा करना है कि यह कैसे बनती है और इसमें पैदा हुई कमी को रोकने के क्या तरीके हैं। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य ओजोन के महत्व और इसे सुरक्षित रखने के महत्वपूर्ण साधनों के बारे में आम जनता को शिक्षित करना है।

ओजोन ऑक्सीजन का एक एलोट्राप है, लेकिन ऑक्सीजन के विपरीत ओजोन एक विषैली गैस है। प्रत्येक ओजोन का अणु तीन ऑक्सीजन के अणुओं से मिलकर बना है इसलिए इसका सूत्र 03 है। 'ओजोन' तब बनती है जब पराबैंगनी किरणें ऑक्सीजन मॉलेक्यूल्स को ऊपरी वातावरण में बनाती है। यदि एक मुक्त ऑक्सीजन का अणु किसी ऑक्सीजन मॉलेक्यूल में जाता है तो तबये तीन ऑक्सीजन अणु मिलकर ओजोन अथवा 03 बनाते हैं। ओजोन हल्के नीले रंग की तीखी गंध वली गैस है, जो ऊपरी वायुमण्डल में पाई जाने वली अनेक प्राकृतिक गैसों में एक है। जर्मन वैज्ञानिक क्रिश्चियन फ्रेडरिक श्योनबाइन ने 1839 में 'ओजोन' गैस की खोज की थी। ओजोन की तीखी विशेष गंध के कारण इसका नाम ग्रीक शब्द ' ओजिन' से बना है, जिसका अर्थ है सूंघना। ओजोन गैस ऊपरी वायुमण्डल (समताप मण्डल) में पृथ्वी से 15-16 किमी. ऊपर एक अत्यन्त पतली पारदर्शी परत के रूप में पाई जाती है। ओजोन निचले वायुमण्डल (क्षोभ मण्डल)में अल्पमात्रा में भी पाई जाती है। ऑक्सीजन के दो परमाणुओं के जुड़ने से ऑक्सीजन गैस (02) बनती है और ऑक्सीजन के तीन परमाणुओं के जुड़ने से ओजोन गैस बनती है।

पृथ्वी के ऊपर चारो तरफ 800 किमी. मोटा वायुमण्डल है, जो पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण बल के कारण धरती से चिपका रहता है। वायुमण्डल में पाँच परते हैं जिन्हें क्षोभमण्डल (पृथ्वी से 14 किमी. तक), समताप मण्डल (पृथ्वी से 14 किमी. के बाद 30 किमी. ऊपर तक), ओजोन मण्डल (पृथ्वी से 30 किमी. के बाद 60 किमी. तक),आयन मण्डल और बर्हिमण्डल के नाम से जाना जाता है। हमारे जीवन के लिए ओजोन परत बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह परत सूर्य की उच्च आवृत्ति की पराबैंगनी किरणों की अधिकतम मात्रा अवशोषित कर लेती है, जो पृथ्वी पर जीवन के लिए हानिकारक है।

पृथ्वी के नजदीक की वातावरणीय परत, इसमें गाड़ियों से निकलने वाले धुंए के कारण नाइट्रोजन ऑक्साइड व हाइड्रोकार्बन का स्तर बढ़ जाता है। सूर्य प्रकाश की उपस्थिति में ये रसायन ओजोन का निर्माण करते हैं। इस ओजोन के कारण स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव हो सकता है। जैसे खाँसी, गले में

खराश, अस्थमा का आघात, ब्रॉन्काईटिस आदि। इससे फसलों को भी नुकसान हो सकता है। पृथ्वी से ऊपर की परत में स्थित ओजोन हमारे लिए रक्षा परत के समान होती है। जबकि पृथ्वी की परत के नजदीक की ओजोन हमारे लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या पैदा कर सकती है।

ओजोन समाप्ति की प्रक्रिया-

मानवीय गतिविधियों के कारण क्लोरोलोरोकार्बन का निर्माण होता है और ये वातावरण में ओजोनपरत का निर्माण करती है। सूर्य से पराबैगनी विकिरण, क्लोरोलोरोकार्बन को तोड़कर क्लोरिन का निर्माण करता है। क्लोरिन के अणु ओजोन के मॉलेक्यूल्स को तोड़कर उसका क्षरण करते हैं।

ओजोन संरक्षण के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयासः

अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय ने क्लोरोलोरोकार्बन (सीएफसी) तथा अन्य ओजोन ह्यसक पदार्थो (Ozone Depleting Substance Or ODS)जैसे हैलोन तथा कार्बन टेट्राक्लोराइड, पर नियंत्रण करने तथा वर्ष 2000 तक उन्हें पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करने के लिए अभूतपूर्व कदम उठाया। ओजोन परत पर विएना वार्ता तथा उसके बाद ओजोन स्तर का ह्रास करने वले पदार्थो पर मांट्रियल प्रोटोकॉल, जिसे 1987 में अपनाया गया तथा 1990 में और अधिक मजबूत बनाया गया ने सीएफसी तथा अन्य ओजोन क्षयकारकों को समाप्त करने के लिए वर्ष 2000 की समय सीमा निर्धारित की थी। प्रोटोकॉल में ओजोन क्षयकारकों तथा उन पर आधारित पदार्थो के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए नियमों का निर्धारण किया। चूँकि विकासशील देश विकसित देशों की तुलना में तकनीकी और आर्थिक रूप से पिछड़े हैं वे सीएफसी को नियंत्रित करने में कठिन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। अतः मांट्रियल प्रोटोकल के प्रावधानों को पूर्ण रूप से लागू करने के लिए इन देशों को दस वर्ष (अर्थात् 2010 तक) की छूट दी गई। मांट्रियल प्रोटोकल में विकासशील देशों को सीएफसी अथवा ओजोन परत के अन्य क्षयकारकों को नष्ट करने हेतु होने वाले व्यय में सहायता देने के लिए एक बहुपक्षीय कोष के गठन का प्रावधान किया गया मांट्रियल प्रोटोकल पर हस्ताक्षर होने के बाद संयुक्तराष्ट्र महासभा के संकल्प के अनुक्रम में 1995 के बाद से प्रतिवर्ष 16 सितम्बर को ओजोन परत के संरक्षण के लिए अंतराष्ट्रीय ओजोन दिवस मनाया जाता है। मांट्रियल प्रोटोकल का प्रमुख उद्देश्य कुल वैश्विक उत्पादन से उन पदार्थो के उपभोग को नियंत्रित करने के लिए उपाय करने का है जो कि ओजोन परत के लिए हानिकारक है।

सन् 1980 के आसपास वैज्ञानिकों को ओजोन परत में छिद्र होने का पता चला जिसके बाद विश्व भर में जागरूकता के प्रयास प्रारम्भ हुए। वैज्ञानिकों ने अंटार्कटिका के ऊपर वायुमण्डलीय ओजोन पर अध्ययन के दौरान पाया कि प्रत्येक दक्षिणी बसंत में ध्रुवीय अंटार्कटिका के 15-24 किमी. ऊपर समताप मण्डल (Stratosphere) में 50-55 प्रतिशत ओजोन नष्ट हो जाती है। इससे ओजोन परत में कुछ रिक्त स्थान बन जाते हैं, जिन्हें अंटार्कटिका ओजोन छिद्र' कहा गया। ठंडी दक्षिणी सर्दियों में वहाँ शक्तिशली चक्रवात एवं तीखी पश्चिमी हवाएँ चलती है और तापमान शून्य से नीचे तक पहुंच जाती है। ऐसे में ध्रुवीय समतापीय बादल बनते हैं जो अपनी सतह पर अत्यन्त क्रियाशक्ति क्लोरीन को संघनित कर लेते हैं। यह क्लोरीन परमाणु बसंत के सूरज की पहली किरण के साथ ही मुक्त हो जाते हैं और ओजोन से क्रिया करते हैं। प्रत्येक बसंत में ओजोन छिद्र दिखाई देता है, लेकिन उष्ण कटिबंध की ओजोन अधिकता वली वायु इन छिद्रों को शीघ्र ही भर देती है। इस प्रकार छिद्र की यह घटना स्थायी नहीं रहती। कम या अधिक होती रहती है।

ओजोन क्यों है पृथ्वी का सुरक्षा कवच -

ओजोन परत में छिद्रों का निर्माण पराबैंगनी विकिरण को आसानी से वायुमण्डल में आने का मार्ग प्रदान करता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि वायुमण्डल में छोड़े जाने वले पदार्थ ओजोन परत को नुकसान पहुँचा पाते हैं। इसके प्रभाव से मानव के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। यह हमारे शरीर के प्रतिरोधी तंत्र को कमजोर कर सकता है। जिससे बीमारियाँ हमें आसानी से अपनी चपेट में ले सकती है। यह प्राणियों की डीएनए संरचना में बदलाव का कारण भी बन सकती है। यह पेड़ पौधों की प्रकाश संश्लेषण क्रिया को भी प्रभावित करती है। जीव-जगत के लिए ओजोन परत बहुत महत्वपूण

है, क्योंकि यह सूर्य से पृथ्वी पर आने वाली खतरनाक पराबैंगनी किरणों में होने वाले विकिरण को रोकती है। ओजोन के क्षरण से पृथ्वी का तापमान बढ़ने का खतरा भी हो सकता है। जिससे ध्रुवों की बर्फ और हिमखण्ड पिघल सकते हैं। ऐसे में तटीय क्षेत्रों का जलस्तर बढ़कर बाढ जैसे हलत उत्पन्न कर सकता है।

भारत व ओजोन क्षरण -

तेजी से विकास की ओर अग्रसर भारत जैसे देश में ओजोन से जुड़ी चिन्ताएँ कुछ बड़ी तथा अलग हैं। कई रिपोर्टो में कहा गया है कि हमारा देश ओजोन क्षरण से सर्वाधिक प्रभावित होने वले देशों में शामिल है। स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर 2017 रिपोर्ट के अनुसार भारत में पिछले दो दशकों में ओजोन क्षरण के प्रभाव से स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या में वृद्धि हुई है।

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत ओजोन डेपलेटिंग सब्सटेंस (ओडीएस) और सीएफसी, हैलोन, सीटीसी, मिथाइल क्लोरोफार्म, मिथाइल ब्रोमाइड तथा एचसीएफसी जैसे ओजोन को क्षति पहुँचाने वले पदार्थो को चरणबद्ध तरीके से हटाया जा रहा है।

मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की कार्यकारिणी समिति की 37वीं बैठक में यह निर्णय लिया गया कि फोम निर्माण क्षेत्र से सीएफसी को हटाया जाना चाहिए। इस पर कार्य करते हुए भारत सरकार ने भी सर्वे किया और पाया कि देश में कुल 235 फोम निर्माता कम्पनी हैं जो सीएफसी के उपयोग से फोम निर्माण करती है जिसका उपयोग फ्रिज, पानी की बोतल, केसरोल व लंच बॉक्स आदि बनाने में किया जाता है तथा इसमें कई छोटे-छोटे उद्योग भी शामिल हैं। सरकार के प्रयास के बाद 235 फोम निर्माताओं में से 122 ने अपनी प्रोसेस को पूर्णतः बदल दिया है तथा उनके द्वारा (CFC)के स्थान पर मीथिलीन क्लोराइड का उपयोग किया जा रहा है। मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के संदर्भ में भारत सरकार द्वारा विगत कुछ वर्षो में ODC को न्यूनतम करने के संदर्भ में India Cooling Action Plan का मसौदा सितम्बर 2018 में जारी किया गया है जिसमें प्रशीतन उद्योग में CFC के उपयोग को न्यूनतम करने सम्बन्धी कार्ययोजना है। चूँकि प्रशीतन में CFC के अतिरिक्त ऊर्जा का भी अत्यधिक उपयोग होता है। जिससे Co2 के उत्सर्जन व ग्लोबल वार्मिंग के खतरे भी बढ़ते जा रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय ऊर्जा संस्थान के अनुसार विश्व की कुल Co2 के उत्सर्जन का 10% प्रशीतन सम्बन्धी कार्यो में उपयोग होने वली ऊर्जा के कारण होता है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण मापन व नियंत्रण के क्षेत्र में अनेक वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यो का सम्पादन करता है। चूँकि ओजोन का स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अतः मंत्रलय द्वारा वर्ष 2009 में जारी परिवेशीय वायु गुणवत्ता प्रबोधन में ओजोन को भी एक प्रदूषक के रूप में सम्मिलित किया है तथा प्रबोधन हेतु केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा विभिन्न राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के साथ समन्वय किया गया है तथा ओजोन का प्रबोधन कर ऑकड़े एकत्र करना प्रारम्भ कर दिया गया है। केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सतत् परिवेशीय वायु गुणवत्ता प्रबोधन कार्यक्रम में भी ओजोन का प्रबोधन किया जा रहा है। बोर्ड द्वारा ओजोन परत संरक्षण हेतु राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रयास किये जा रहे हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि ओजोन एक बहुत ही प्रबल आक्सीकारक है जो हमारे जीवन में बहुत महत्व रखता है। ओजोन परत सूर्य से आ ही अल्ट्रावॉयलेट किरणों को धरती पर आने से रोकती है। अल्ट्रावॉयलेट किरणें हमारी वनस्पति एवं पेड़-पौधों के लिए बहुत हानिकारक हैं। इन किरणों के द्वारा मनुष्य को स्कीन कैंसर हो सकता है। क्लोरोलोरो कार्बन यौगिक समताप मण्डल के ओजोन परत में छेदकर रहे हैं इससे अल्ट्रावॉयलेट किरणों का धरती पर पहुँचने का खतरा बना हुआ है जिस पर नियंत्रण आवश्यक है। ❑

पता : संत अतुलानंद कान्वेन्ट स्कूल
गिलट बाजार,शिवपुर,
वाराणसी (मो.नं.-7007287137)

ईमानदारी और सादगी के प्रतीक थे शास्त्री जी

- अंकुर सिंह

देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर को शारदा प्रसाद और रामदुलारी देवी के घर उत्तर प्रदेश में मुगलसराय शहर के पास रामनगर में हुआ था। नेहरू जी के निधन के बाद शास्त्री जी देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। शास्त्री जी के ईमानदारी और सादगी-पूर्ण जीवन के अनेक किस्से है -

पहला वाकया जिक्र कर रहा हूं, जब शास्त्री जी देश के प्रधानमंत्री थे, एक बार उनके बेटे सुनील शास्त्री जी ने रात कही जाने हेतु सरकारी गाड़ी लेकर चले गए और जब वापस आए तो लाल बहादुर शास्त्री जी ने पूछा कहा गए थे, सरकारी गाड़ी लेकर इस पर सुनील जी कुछ कह पाते की इससे पहले लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा कि सरकारी गाड़ी देश के प्रधानमंत्री को मिली है ना की उसके बेटे को, आगे से कही जाना हो तो सरकारी गाड़ी का प्रयोग ना किया करो, शास्त्री जी यही नहीं रूके उन्होंने अपने ड्राइवर से पता करवाया की गाड़ी कितने किलोमीटर चली है और उसका पैसा सरकारी राज कोष में भी जमा करवाया।

हमारे देश में आजकल जन प्रतिनिधियों के परिजनों के साथ उनके करीबी लोग भी उन्ही के सरकारी गाड़ी में घूमते हैं अपने व्यक्तिगत कार्यों के लिए।

दूसरा वाक्या जिक्र कर रहा हूं, लाला लाजपतराय ने आजादी की लड़ाई लड़ रहे गरीब देशभक्तों के लिए सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसाइटी बनायीं थी जो गरीब देशभक्तों को पचास रूपये की आर्थिक मदद प्रदान करती थी, एक बार जेल से उन्होंने अपनी पत्नी ललिता जी को पत्र लिखकर पूछा कि क्या सोसाइटी की तरफ से जो 50 रूपये की आर्थिक मदद मिलती हैं उन्हें, जवाब में ललिता जी ने कहा हाँ जिसमे से 40 रूपये में घर का खर्च चल जाता है। शास्त्री जी ये पता चलते ही बिना किसी देर किये सर्वेंट्स आफ इंडिया सोसाइटी को पत्र लिखा कि मेरे घर का खर्च 40 रूपये में हो जाता हैं, कृपया मुझे दी जानी वाली सहयोग 50 रूपये से घटा कर 40 रूपये कर दी जाए ताकि ज्यादा से ज्यादा देशभक्तों को भी आर्थिक सहयोग मिल सकें।

आज का युग में तो यदि जन प्रतिनिधियों के सैलरी बढ़ोत्तरी की बात हो तो क्या सत्ता पक्ष, क्या विपक्ष दोनों एक मत हो इस मांग पर अपना समर्थन दे देते हैं, भले ही राष्ट्रहित और समाज हित के मुद्दों पर ये लड़ते देखे जाए। ये भी नहीं सोचते आज के वर्तमान जनप्रतिनिधि की वह तो सरकारी पैसे से मौज से जी रहे है और देश का किसान, मजदूर इत्यादि गरीबी, महंगाई और अभाव की जिंदगी जी रहे हैं।

किस्सों के दौर में आगे चलते है तो एक किस्सा और जुड़ा है शास्त्री जी से, शास्त्री जी जब प्रधानमंत्री थे और उन्हें मीटिंग के लिए कही जाना था। जब वह कपड़े पहन रहे थे तो उनका कुर्ता

फटा था जिसपर परिजनों ने कहा आप नया कपड़ा क्यों नहीं ले लेते हैं। इस पर पलट कर शास्त्री ने कहा की मेरे देश के अब भी लाखों लोगो के तन पर कपड़े नहीं है, फटा हुआ तो क्या हुआ इसके ऊपर कोट पहन लूंगा, और फटा कपड़ा इस तरह कुछ दिन और काम में आ जायेगा।

ऐसे थे हमारे शास्त्री जी, आज के जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों के सुट लाखों में आते हैं इन्हे इससे फर्क नहीं पड़ता की देश के लाखों लोगो की वार्षिक आय भी नहीं होगी लाखों रूपये।

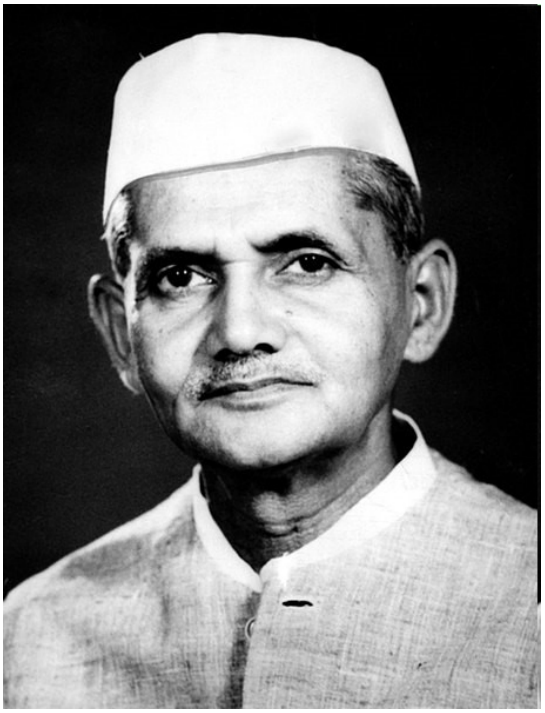

कथनी और करनी में समानता रखते थे शास्त्री जी, बात सन 1965 का जब भारत और पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था और भारतीय सेना लाहौर के हवाई अड्डे पर हमला करने की सीमा के भीतर पहुंच गयी थी। घबराकर अमेरिका ने अपने नागरिकों को लाहौर से निकालने के लिए कुछ समय के लिए युद्ध विराम की अपील की उस समय हम अमेरिका की पीएल-480 स्कीम के तहत हासिल लाल गेहूं खाने को बाध्य थे हम भारतीय। अमेरिका के राष्ट्रपति ने शास्त्री जी को कहा कि अगर युद्ध नहीं रूका तो गेहूं का निर्यात बंद कर दिया जाएगा। उसके बाद अक्टूबर 1965 में दशहरे के दिन दिल्ली के रामलीला मैदान में शास्त्री जी ने देश की जनता को संबोधित किया। उन्होंने देशवासियों से एक दिन का उपवास रखने की अपील की और साथ में खुद भी एक दिन उपवास का पालन करने का प्रण लिया। देश के सीमा के रक्षक जवान और देश के अंदर अन्नदाता के लिए जय जवान, जय किसान का नारा दिया।

10 जनवरी 1966 में ताशकंद में भारत के प्रधानमंत्री शास्त्री जी और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के बीच बातचीत करने का समय निर्धारित थी। लाल बहादुर शास्त्री और अयूब खान तय किये गये निर्धारित समय पर मिले। बातचीत काफी लंबी चली और दोनों देशों के बीच शांति समझौता भी हो गया। ऐसे में दोनों मुल्कों के शीर्ष नेताओं और प्रतिनिधिमंडल में शामिल अधिकारियों का खुश होना उचित था। लेकिन उस दिन की रात शास्त्री जी के लिए मौत बनकर आई। 10-11 जनवरी के रात में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई। ताशकंद समझौते के कुछ घंटों बाद ही भारत के लिए सब कुछ बदल गया। विदेशी धरती पर संदिग्ध परिस्थितियों में भारतीय प्रधानमंत्री की मौत से सन्नाटा छा गया। शास्त्री जी की मौत के बाद तमाम सवाल खड़े हुए, उनकी मौत के पीछे साजिश की बात भी कही जाती है, क्योंकि, शास्त्री जी की मौत के दो अहम गवाह उनके निजी चिकित्सक आर एन चुग और घरेलू सहायक राम नाथ की सड़क दुर्घटनाओं में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हुई तो यह रहस्य और गहरा हो गया।

देश के नागरिकों को चाहिए की शास्त्री जी के मौत की निष्पक्ष जांच की मांग करें सरकार से, यही शास्त्री जी के प्रति देश वासियों की सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ❑

पता : हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र. -222129.
मोबाइल - 8367782654.
व्हाट्सअप - 8792257267.
ईमेल -ankur3ab@gmail-com

जीवन में उत्कृष्टता के लिए अनिवार्य है श्रेष्ठ विकल्पों का चयन

सीताराम गुप्ता

स्कूटर अथवा अन्य वाहनों के मुकाबले में कार अपेक्षाकृत अधिक आरामदायक व सुरक्षित सवारी है। कई लोग कार तो रखते हैं लेकिन उसका उपयोग या तो नहीं करते या फिर बहुत ही कम करते हैं। यदि हम कार का उपयोग नहीं करते अथवा बहुत कम करते हैं तो कार रखने का क्या लाभ? जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी हमारे साथ प्रायः ऐसा ही होता है। हमारे पास प्रयोग के लिए बेहतर अथवा बहुत अच्छी चीजें होती हैं लेकिन हम बेहतर अथवा बहुत अच्छी चीजों का उपयोग करने के बजाय सामान्य या बेकार चीजों का इस्तेमाल करते रहते हैं क्योंकि हम प्रायः बेहतर अथवा बहुत अच्छी चीजों को भविष्य के लिए सुरक्षित कर लेना चाहते हैं लेकिन वास्तविकता ये है कि ऐसा कोई विशेष दिन कभी नहीं आता जब हम बेहतर चीजों का प्रयोग कर सकें। यदि हम रोज ताजा भोजन बनाएँ लेकिन खाएँ रोज पिछले दिन का बचा बासी भोजन तो इससे क्या होगा? क्या ये उचित होगा कि हम साफ-सुथरे फलों को रख दें कि कल खाएँगे और गले-सड़े फल आज खा लें? इससे हमारा स्वास्थ्य ही बिगड़ेगा।

हम जब तक गले-सड़े फलों और बासी भोजन को सँभाल कर रखते रहेंगे कभी वो दिन नहीं आएगा जब हम ताजा भोजन और साफ-सुथरे फल खा सकें। यदि हमें अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है तो कम उपयोगी अथवा निरर्थक चीजों व स्थितियों से छुटकारा पाना ही होगा अन्यथा हम जीवन में आगे बढ़ने की बजाय और अधिक पिछड़ जाएँगे। जरूरी है कि हम इस प्रकार की योजना बनाएँ अथवा व्यवस्था करें कि हमें हमेशा ही ताजा भोजन व दूसरी खाने-पीने की चीजें भी साफ-सुथरी ही मिलती रहें। कई बार भौतिक पदार्थों पर हमारा वश नहीं चलता। पर्याप्त देख-भाल के बावजूद चीजें खराब हो सकती हैं। स्थितियाँ भी कई बार हमारे नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं। लेकिन कुछ चीजें अथवा स्थितियाँ ऐसी होती हैं जिन पर हमारा पूरा नियंत्रण होता है। मान लीजिए हम दस किलोमीटर तक दौड़ सकते हैं लेकिन हम कभी दो-तीन किलोमीटर से अधिक नहीं दौड़ते। आखिर हम अपनी क्षमता का पूरा इस्तेमाल क्यों नहीं करते?

कई व्यक्ति मितव्ययी होते हैं इसलिए कम खर्च करते हैं। आज के समय में प्रदूषण से मुक्ति व परिवेश को बचाए रखने के लिए भी संसाधनों का दुरूपयोग रोकना अनिवार्य है और इसके लिए कम उपभोग करना एक कारगर उपाय प्रतीत होता है। इसलिए अनिवार्य हो जाता है कि हम कम वस्तुओं का उपभोग करें और केवल वे चीजें ही खरीदें जो हमारे लिए अत्यावश्यक हों। भौतिक वस्तुओं के संदर्भ में इस प्रकार की मितव्ययता अथवा अपरिग्रह बहुत अच्छी बात है लेकिन हमारी आदतों अथवा व्यवहार के क्षेत्र में इस प्रकार की मितव्ययता से कोई लाभ नहीं होता अपितु हानि हो जाती है। हमारी आदतों और व्यवहार के विषय में ये तथ्य पूरी तरह से लागू होता है। यदि आज हम अपनी क्षमता का भरपूर इस्तेमाल नहीं करते तो फिर कब करेंगे? यदि हमने आज अपने व्यवहार को उत्कृष्ट नहीं बनाया तो कब बनाएँगे? यदि आज हम लोगों के साथ निकृष्ट व्यवहार करेंगे तो भविष्य में उत्कृष्ट व्यवहार का भी कोई विशेष लाभ हमें नहीं मिलेगा।

हम जो कार्य अच्छी तरह से कर सकते हैं उसको करने में आनाकानी क्यों करते हैं? और यदि करते भी हैं तो लापरवाही से कामचलाऊ काम क्यों करते हैं? यदि हम अपनी क्षमता का भरपूर इस्तेमाल नहीं करेंगे तो एक दिन वो मात्र उतनी ही रह जाएगी जितना हम उसका इस्तेमाल करते हैं। यदि हमारे पास कार है तो स्कूटर रखने का क्या औचित्य हो सकता है? यदि कोई ये कहे कि स्कूटर में कम खर्च होता है और कार में ज्यादा अतः दोनों के रखने से औसत खर्च कम हो जाता है तो ये भयंकर भूल है। दो वाहनों के रखरखाव व टूट-फूट में इतना अधिक व्यय हो जाता है कि एक अच्छा व अपेक्षाकृत महँगा वाहन रखने पर भी ढेर सारी बचत ही होगी। इसके बावजूद भी यदि कोई दो वाहन रखने और छोटे और कम सुविधाजनक वाहन का प्रयोग करने का विकल्प चुने तो क्या किया जा सकता है? कई बार बहुत स्याणे किस्म के लोग इसका भी ऐसा जवाब दे देंगे कि आप निरूत्तर हो जाएँ लेकिन वास्तविक तथ्यों की उपेक्षा करने को समझदारी तो बिलकुल नहीं कहा जा सकता।

वास्तव में समस्या का कारण हमारे पास अच्छे और कम अच्छे या बुरे विकल्पों का होना और हमारे द्वारा उन सभी का प्रयोग करना है। जब हमारे पास अच्छे अथवा श्रेष्ठ विकल्प उपलब्ध हैं तो हम कम अच्छे या बुरे विकल्पों का चयन करते ही क्यों हैं? और तो और हमारी सोच के साथ भी ऐसा ही होता है। हमारी छोटी सोच के कारण बड़ी सोच का विकास ही नहीं हो पाता। वह अविकसित रह जाती है। हम बड़ा सोचने में भी कंजूसी करते हैं जबकि हमारे जीवन का विकास पूर्णतः हमारी सोच पर निर्भर करता है। जैसी सोच वैसा जीवन। जैसी सोच वैसी समृद्धि। जैसी सोच वैसा स्वास्थ्य। जैसी सोच वैसे संबंध। फिर भी हम अपनी सोच को बड़ी व सकारात्मक क्यों नहीं बनाते? हमें अपनी इस आदत को बदल डालना चाहिए अन्यथा हम श्रेष्ठ विकल्पों के होते हुए भी जीवन में छोटी सोच का उपयोग करके पर्याप्त उन्नति नहीं कर पाएँगे। विचारों की दरिद्रता अथवा छोटी व नकारात्मक सोच हमारे जीवन के विकास में सबसे बड़ी बाधा बनती है इसमें संदेह नहीं।

हमारे अंदर अनेक प्रकार के विचार विद्यमान रहते हैं। हमारे अंदर नकारात्मकता भी होती है तो सकारात्मकता भी होती है। हमारे अंदर ही कम उत्साहपूर्ण विचार भी होते हैं तो पूरी तरह से उत्साहपूर्ण विचार भी होते हैं। ये हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम सकारात्मक विचारों को महत्त्व देते हैं अथवा नकारात्मक विचारों को। हम निराशावादी अथवा कम आशावादी बने रहते हैं अथवा पूर्ण आशावादी। यदि हमें अपने जीवन में सफलता प्राप्त करनी है अथवा अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाना है तो हमें जीवन के उज्ज्वल पक्षों का चुनाव करना होगा। जिस प्रकार से आरामदायक व सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए कम आरामदायक व कम सुरक्षित स्कूटर से मुक्ति पाना अनिवार्य है उसी प्रकार से जीवन में पूर्ण सफलता व व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए कम उपयोगी अथवा निरर्थक विचारों से मुक्ति अनिवार्य है। जब तक मन में कमजोर मनोभाव व्याप्त रहेंगे उनका प्रभाव भी पड़ता रहेगा।

दुख की बात ये है कि हम बहुत कुछ जानते हैं और हममें बहुत कुछ करने की क्षमता भी होती है लेकिन अपनी अकर्मण्यता अथवा नकारात्मकता के कारण हम अपनी जानकारी व क्षमता का भरपूर इस्तेमान नहीं करते अथवा कर पाते। हमारे अंदर बहुत से दुर्गुण हैं तो बहुत से सद्‌गुण भी हैं। हम जानते हैं कि किसी की मदद करना अच्छी बात है लेकिन जब किसी की मदद करने का अवसर आता है तो हम पीछे हट जाते हैं। मदद न करने का कोई न कोई बहाना खोज लेते हैं। हमें इस आदत से बचना चाहिए। यदि हम किसी की मदद कर सकते हैं तो हमें अवश्य ही मदद करनी चाहिए और अपनी क्षमता से बढ़कर मदद करनी चाहिए। हम मदद कम करते है प्रचार अधिक करते हैं। यदि हम प्रचार के लोभ से मुक्त होकर व अपनी क्षमता से बढ़कर किसी की मदद कर देते हैं तो उससे जो आनंद मिलता है वह दुर्लभ है। लेकिन ये तभी संभव है जब हम अपने छोटी सोच रूपी स्कूटर से उतरकर बेहतर सोच रूपी कार पर सवार हो जाएँ।

इसी प्रकार से यदि हमें किसी का अभिवादन करना हो तो भी हम आधे-अधूरे मन से ये क्रिया संपन्न करते हैं जबकि हम ये पूर्ण उत्साह से भी कर सकते हैं। और इससे न केवल पारस्परिक संबंध मधुर रहेंगे अपितु संबंधों में क्रमशः सुधार भी होता रहेगा। जब हम किसी का अच्छी तरह से स्वागत-सत्कार कर सकते हैं तो उपेक्षा करने की क्या जरूरत है? हम आसानी से मृदु भाषा में व्यवहार कर सकते हैं तो कटु वचनों का प्रयोग क्यों करें? कुछ लोग नियमित रूप से सत्संगादि में जाते हैं। बड़ी अच्छी बात है। सत्संग के प्रभाव से वे हमेशा अच्छी-अच्छी बातें करते हैं लेकिन उनके व्यवहार में कोई सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होता। केवल अच्छी बातें जानने व दूसरों को उपदेश देने मात्र से हमारा व्यवहार अच्छा नहीं हो सकता। मात्र अच्छी बातों की जानकारी होना पर्याप्त नहीं क्योंकि इससे तो केवल हमारे अहंकार में वृद्धि ही होती है।

हमें चाहिए कि हमने जो भी अच्छा सीखा है उसे अपने व्यवहार में लाएँ और जो इसमें बाधक है उससे हर हाल में मुक्त होने का प्रयास करें। हमारे पास दोनों विकल्प हैं लेकिन हम सही का चुनाव करना नहीं जानते अथवा नहीं चाहते। जिस दिन हम उपलब्ध श्रेष्ठ विकल्पों का प्रयोग करने की आदत डाल लेंगे जीवन की दशा और दिशा दोनों बदल जाएँगी। जीवन रूपी सफर आरामदायक और सुरक्षित हो जाएगा। हमें न केवल अपनी मंजिल तक का सफर करने में आसानी होगी अपितु अपेक्षाकृत कम समय में भी वहाँ पहुँच सकेंगे। जीवन में सचमुच कुछ बड़ा करने के लिए छोटे-छोटे अथवा कम महत्त्व के कार्यों से छुटकारा पाना अनिवार्य है अन्यथा हमारी सारी ऊर्जा कम महत्त्व के अथवा अनुपयोगी कार्यों में ही व्यय हो जाएगी जिससे बड़े कार्यों को करने के लिए न तो ऊर्जा ही बचेगी और न पर्याप्त समय ही बच पाएगा। ❑❑

पता : ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा,
दिल्ली - 110034
मोबा0 नं0 9555622323
Email : srgupta54@yahoo-co-in

सारंग त्रिपाठी
अपर जिला सहकारी अधिकारी
अधिकोषण अनुभाग,
मुख्यालय सहकारिता।

हर कदम पर डूबती है जिंदगी

हर कदम पर डूबती है जिंदगी,
राह कब से पूछती है जिंदगी।
ये नहीं मंजिल है इसकी देखिये,
है खड़ी साहिल पे कब से जिंदगी।
रात का तूफान कितना तेज था,
वो दिया था या कि मेरी जिंदगी।
हमने माना जिंदगी इक खार है,
चुभना इसका भी तो है इक जिंदगी।
चॉदनी रातों में चमकी थी बहुत,
धूप में भी देख लेंगे जिंदगी।
राह के कॉटे तो मैने चुन दिये,
दूर क्यूं है मुझसे मेरी जिंदगी।।

❑❑❑

दूरभाष : 9935603236

लघु प्रसंग

बड़ों के प्रेरक प्रसंग

- चन्द्रकान्ता शर्मा

जनरल आइजनहोवर द्वितीय विश्वयुद्ध में किसी मोर्चे का अध्ययन करने गए। वहाँ का मेजर जनरल उनके साथ था। वर्षा के कारण चारों ओर कीचड़ थी। आइजनहोवर ने विशेष रूप से बने एक छोटे से मंच पर खड़े होकर कुछ शब्द कहे, लेकिन जब वे उतरने लगे तो उनका पैर फिसल गया और कीचड़ में गिर पड़े। इस पर सारे सैनिक खिलखिलाकर हंस पड़े। मेजर जनरल ने आइजनहोवर को अपने हाथ का सहारा देकर उठाया और सैनिकों की अशिष्टता के लिए क्षमा मांगी।

'इसमें क्षमा मांगने की बात ही क्या है ! मेरे भाषण की अपेक्षा, मेरे फिसलने से उनका मनोरंजन ज्यादा हुआ होगा।' आइजनहोवर ने सहजता से जवाब दिया।'

अमरीकी सेनापति ग्रांट एक बार टहलते हुए सिगार पी रहे थे। लेकिन जहाँ वे सिगार पी हरे थे, वहाँ सिगार पीने की मनाही थी। वहाँ पर तैनात चौकीदार ने उनके पास आकर कहा, 'श्रीमान आप यहाँ सिगार नहीं पी सकते।'

'क्यों ?' ग्रांट ने पूछा।

'यहाँ सिगार पीना मना है।'

'तो क्या यह तुम्हारा आदेश है कि मैं यहाँ सिगार न पीऊं ?'

नमृतापूर्वक किन्तु दृढ़ता से चौकीदार बोला, 'जी।'

'बहुत अच्छा'-कहकर सेनापति ग्रांट ने सिगार फैंक दिया।'

प्रसिद्ध संगीतकार प्योर मोत्यु एक बार एक शहर में अपनी पत्नी के साथ एक होटल में कमरा लेने पहुंचे। रिसेप्शनिष्ट बोली, 'अफसोस, कोई कमरा खाली नहीं है।'

पास खड़े एक व्यक्ति ने रिसेप्शनिष्ट को बताया कि वे कौन है, वह चौंक पड़ी। बड़े ही नम्र स्वर में वह बोली, 'क्षमा करें, मैं आपको साधारण व्यक्ति समझ बैठी थी। अभी आपको कमरे का प्रबन्ध किए देती हूँ।'

मोत्यु गम्भीरता से बोले, 'मैडम, हर व्यक्ति साधारण व्यक्ति है। अलविदा।' कहकर वे होटल से बाहर हो गए।'

प्रसिद्ध दार्शनिक देकार्त के साथ एक बार किसी ने दुर्व्यवहार किया। उत्तर में देकार्त कुछ नहीं बोले। इस पर उनके एक मित्र ने कहा, 'उसने तुम्हारे साथ अशिष्ट व्यवहार किया और तुमने कुछ नहीं कहा। तुम्हें इसका बदला लेना चाहिए।'

'जब कोई मुझसे बुरा व्यवहार करता है, तब मैं अपनी आत्मा को उस ऊँचाई पर ले जाता हूँ, जहाँ कोई अशिष्टता उसे छू नहीं सकती।' नम्रता से देकार्त ने मित्र से कहा।'

अल्बर्ट श्वाइत्जर 1949 में अमरीका गए। वहाँ स्ट्रांसबर्ग के संडे स्कूल के एक पुराने छात्र ने उन्हें एक रेस्तरां में नाश्ते के लिए बुलवाया। इसी अवसर पर विशेष रूप से बनाया गया 'केक' भी लाकर रखा गया। बहुत कीमती केक था। देखने में भी बहुत सुन्दर था। जब श्वाइत्जर से केक काटने की प्रार्थना की गई तो उन्होंने छुरी हाथ में ली और उपस्थित लोगों को गिना। नौ व्यक्ति थे, लेकिन श्वाइत्जर ने केक के दस टुकड़े काटे।

फिर उपस्थित लोगों को जिज्ञासा दूर करने के लिए बोले, 'दसवां टुकड़ा उस युवती के लिए है, जिसने इतने करीने से केक यहाँ लाकर रक्खा है।' और उन्होंने एक टुकड़ा प्लेट में सजाकर वेट्रेस (सेविका) की ओर बढ़ा दिया। ❑

पता : 124/61-62, अग्रवाल फार्म,
मानसरोवर, जयपुर-302020,(राजस्थान)
फोनः-0141-2782110

शासकीय कार्यों में

राजभाषा

का उपयोग

— श्रीमती कुसुम सिंह
एम.ए., बी.एड.

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक प्राणी अपने विचारों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। यह ऐसी दैवी शक्ति है, जो मनुष्य को मानवता प्रदान करती है और उसका सम्मान तथा यश बढ़ाती है। जिसे वाणी का वरदान प्राप्त होता है, वह बड़े से बड़े पद पर प्रतिष्ठित हो सकता है और अक्षय कीर्ति का अधिकारी भी बन सकता है। किन्तु इस वाणी में स्खलन या विकृति आने पर मनुष्य निन्दा और अपयश का भी भागी बनता है। यही नहीं अवांछनीय वाणी उसके पतन का भी कारण बन सकती है। अतः वाणी या भाषा का प्रयोग बहुत सोच-विचार कर करना चाहिए। इसलिए राजकीय कार्यों में पूर्ण सोच विचार के बाद उपयुक्त भाषा का प्रयोग करने की परम्परा रही है।

राज्य या प्रशासन की भाषा को राज्य भाषा कहते हैं। इसके माध्यम से सभी प्रशासनिक कार्य सम्पन्न किये जाते हैं। यूनेस्को के विशेषज्ञों के अनुसार 'उस भाषा को राज्य भाषा कहते हैं, जो सरकारी कामकाज के लिए स्वीकार की गई हो और जो शासन तथा जनता के बीच आपसी सम्पर्क के काम आती हो, जबसे प्रशासन की परम्परा प्रचलित हुई है, तभी से राजभाषा का प्रयोग भी किया जा रहा है। राजपूत काल में तत्कालीन भाषा हिन्दी का प्रयोग राजकाज में किया जाता था। मराठों के राजकाज में भी हिन्दी का प्रयोग किया जाता था। अंग्रेजी शासक यह महसूस करते रहे कि भारत की भाषाओं को बहुत दिनों तक दबाया नहीं जा सकता। अतः उन्होंने हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी को और अन्य प्रदेशों में, वहाँ की भाषाओं को प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं में शिक्षा का माध्यम बनाया। इस श्रीगणेश का शुभ परिणाम यह हुआ कि हिन्दी और भारतीय भाषाएं विकसित होने लगीं और वे उच्च शिक्षा का माध्यम बनीं। इतना ही नहीं स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ हमारे राष्ट्रीय नेताओं ने भारतीय भाषाओं और विशेषकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा और सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित करने का प्रयास प्रारम्भ किया। इस राष्ट्रीय जागरण के परिणामस्वरूप हिन्दी का उत्तरोत्तर प्रसार होने लगा और यह मत व्यक्त किया जाने लगा कि देश के अधिकांश लोगों की बोली होने के कारण हिन्दी को भी भारत की राष्ट्रभाषा बनाया जाना चाहिए। भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ और तभी से देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी विधिवत भारत संघ की राजभाषा है।

आज के वैश्विक समाज में हिन्दी न केवल ताकतवर भाषा बनकर उभरी है, बल्कि देश के साथ-साथ विदेशों में भी इसकी स्वीकार्यता लगातार बढ़ती जा रही है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या राजनीति का अथवा फिल्मों का क्षेत्र हो या विज्ञापन का, हर जगह हिन्दी की तूती बोल रही है। हिन्दी के छात्रों में आज किसी तरह की हीन भावना नहीं है, बल्कि वह पूरे आत्मबल के साथ वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। हिन्दी अपने देश की बहुसंख्यक आबादी की भाषा है।

इस संसार में केवल मनुष्य को ही वाणी का वरदान प्राप्त है। इसके माध्यम से वह अपने मन के विचार तथा भावनाओं को बोलकर या लिखकर व्यक्त कर सकता है, तथा दूसरों के विचारों को सुनकर या पढ़कर समझ सकता है। विचारों की यह अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से होती है। साहित्य, कला, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन आदि सभी का आधार भाषा ही है।

किसी भी स्वतंत्र देश के कुछ राष्ट्रीय चिन्ह या प्रतीक होते हैं जिनमें उसकी राष्ट्र भाषा भी होती है। किसी भी देश में सबसे अधिक बोली तथा

टिप्पणी

समझ–समझ का फेर

- हरीश चंद्र पांडे

जीवन की बात इस जीवन मे हमेशा ही चलती रहती है। हर मौसम में जीवन का अपना ही एक अनूठा सा रंग होता है। अक्सर ही हम यह देखा करते है कि हमारी उम्र ने इक लंबी सांस ली और जब हमने देह की खिड़की से बाहर झांका तो पता लगा कि अब अच्छीखासी जिंदगी अपनी जीवन यात्रा पूरी कर गई।

"और हम.. हम तो अपनी रवानी में जीवन के साथ कभी यहां तो कभी वहां, बस आवारागर्दी करते फिरते है। और हम सब यही सोचते कि हम कितनी जिम्मेदार हैं नौकरी ,चाकरी,बागबगीचे, राशन पानी सहित घर परिवार के लिए तन, मन, धन से जुटे रहे। पर इक दिन आत्मा कहती है बस अपना भोगा अपने लिए भोगा।

इस जीवन की आपाधापी के स्वैग का हर लड्डू मोतीचूर भी अपनी कहानी सबके साथ थोड़ी बहुत घुमावदार रखता ही है।

इसीलिए बडे बुजुर्ग कहते हैं कि, जीवन भरोसे पर चलता है। एक छात्र एक कुछ बन सकने के भरोसे साथ एक स्कूल या कालेज में प्रवेश लेता है। वह बस अगर अपना ही सोचता है तो आगे चलकर मतलबी नागरिक बनता है। हम एक डाक्टर के पास कितने भरोसे के साथ जाते हैं कि वहां दवा लेने जा रहे हैं, जिसे वह अपनी फीस के पैमाने और अपनी उदारत ,तथा आत्मीयता से निर्धारित करता है। एक परिवार भी केवल विश्वास पर ही चल सकता है। चाहे वह प्यार हो, व्यवसाय हो, दोस्ती हो, काम हो या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, हमारे मन की भावना है। आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ खड़े नहीं हो सकते जो चंट है, मतलबी है, लेकिन आपने अपने जीवन में कितनी खुद कितना समर्पण कितनी निष्ठा रखी यह विचारणीय है। एनी बेसेंट बहुत जुझारू प्रकृति की महिला थी। एक बार जब वो कोलकाता में अपनी आध्यात्मिक कार्यशाला में मार्गदर्शन कर रहीं थी, तब कुछ युवक युवतियों को यह बहुत मुश्कल लग रहा था। उनको निर्देशन का पालन करते हुए काफी कठिन परिश्रम करना पड़ रहा था। सुबह चार बजे जागना होता और दोपहर मे बस एक घंटा एकांत का मिलता। इस कड़े अनुशासन से असहज होकर कुछ लोगों ने वापस लौटने का मन बना लिया। एनी बेसेंट चाहती थी कि ये युवक युवती मजबूत भरोसे के बल से अपना जीवन प्रकाशवान करें। वो उनको उसी दिन कुम्हार और मोची का काम दिखाने ले गई जो बहुत मेहनत की मांग करता था। यह देखकर उदासीन युवक युवती कुछ प्रेरित हुए तब एनी बेसेंट ने उनको यह मंत्र बताया कि यह खुद, पर, भरोसा ही हमें बलवान बनाता हैं,हमें इंसान बनाता हैं, हमें विनम्रता सिखाता हैं। और तब मेहनत ही जीत दिलाकर हमारे व्यक्तित्व को निखारती है। लेकिन सिर्फ़ विश्वास ही है जो हमें आगे बढने की प्रेरणा देता है। इसलिए हमेशा अपने आप पर, अपने लोगों पर और अपने नैतिक बल पर विश्वास रखिये। अब उनकी पूरी कार्यशाला आराम से संपूर्ण हो गई। सही बात है कि जिस पल से हमारा मन दूसरों के लिए शुभ सोचना प्रारंभ कर देता है, शांति उसी समय से हमारे जीवन में प्रविष्ट हो जाती है!एक बार गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगौर अपने माटी की कुटिया के सृजन मे कुदरत संबंधी तमाम शोध और पठन पाठन में रमे हुए थे कि गाधीजी समेत एक दल उनसे मिलने शांतिनिकेतन आया। दल के कुछ लोग पहली बार आये थे। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगौर उस समय बाहर मैदान में ही कला साधना कर रहे थे।उनको बैचेनी होने लगी कि वह इस समय किसी को कुछ मूल्यवान भेट न दे सके।तब गाधीजी ने उनको समझाया कि गुरूदेव ज़रूरी नहीं कि हर उपहार कोई कीमती चीज़ ही हो, प्रेम, परवाह और इज़्ज़त भी बहुत उत्तम भेंट हैं, आपने हम सब को दिल से असीम प्रेम देकर यह एक यादगार मुलाकात बना दी है। यह एक भरोसा ही तो था जो प्रेम को भी अनमोल बना गया।

महान दार्शनिक और संत लाओत्से तुंग ने कहा भी है कि इस जीवन को जीना है तो खुद ही जीवन बन जायें।

आप चीजों से दूर रहे पर दीवार न बनायें पर हमको अपने भीतर एक छननी जरूर रखना चाहिए,उससे छन कर ही जो भी मन के भीतर आये वह कलयाणकारी को। एक बार योगिराज कृष्ण से उद्धव ने पूछा कि गुण दोष के आधार पर ही किसी के साथ निभाया जा सकता है। पर इसका पैमाना क्या हो। इसका इतना शानदार जवाब कृष्ण ने दिया कि आसान है बेहद आसान, औरों के बस गुण ही देखो और अपने केवल दोष। फिर सब कुछ सत्यम शिवम सुदरम ही होगा। इसीलिए बुद्ध ने भी कहा कि इस जीवन को छू लें पर

समझी जाने वाली भाषा ही वहाँ की राष्ट्र भाषा होती है। प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व होता है, उसमें अनेक जातियों, धर्मों और भाषाओं के लोग रहते हैं। अतः राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता पड़ती है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँध सके, जिसका प्रयोग सभी नागरिक कर सकें तथा सरकारी कामकाज भी उस भाषा में किया जा सके। ऐसी व्यापक भाषा ही राष्ट्र भाषा कहलाने का गौरव प्राप्त कर सकती है। हिन्दी भाषा इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ है।

राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता : भारत के संविधान का निर्माण करते समय संविधान के निर्माताओं के समक्ष यह प्रश्न आया कि किस भाषा को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया जाए। प्राचीन काल में भारत की भाषा संस्कृत, मुगलकाल में उर्दू तथा ब्रिटिश शासन काल में अंग्रेजी थी। संविधान सभा ने सभी पहलुओं पर भलीभाँति विचार करके 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी है। 14 सितम्बर को ही सम्पूर्ण देश में हिन्दी दिवस मनाया जाता है।

यद्यपि हिन्दी को भारतीय संविधान सभा ने राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, पर कुछ प्रान्तों ने इसका विरोध किया तथा हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार नहीं किया। हिन्दी के पक्षधर यह मानते हैं कि हिन्दी भाषा अत्यन्त सरल है। इसे देश के हर हिस्से में किसी न किसी रूप में अवश्य प्रयोग किया जा रहा है। इसमें शब्द भण्डार असीमित हैं। साथ ही इस भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को भी आत्मसात् करने की अद्‌भुत क्षमता है।

हमारा कर्तव्य है कि हम हिन्दी को अपनाएँ तथा अंग्रेजी के मोहजाल से निकलें। अंग्रेजी का एक भाषा के रूप में सीखना कोई बुरी बात नहीं है, पर एक विदेशी भाषा जिसे भारत के केवल 3-4 प्रतिशत लोग ही बोलते-समझते हों, राष्ट्र भाषा का स्थान नहीं ले सकती। हम याद रखें कि व्यवहार में हिन्दी का प्रयोग हीनता का प्रतीक न होकर गौरव का प्रतीक है।

हिन्दी को बढ़ाने में हिन्दी मीडिया का बड़ा योगदान रहा है। अखबारों में होने वाले सरल-सहज भाषा के प्रयोग ने इसे व्यापक लोगों तक पहुँचाया है। अनुवाद के जरिए आज बहुत सारा विश्व-साहित्य हिन्दी में उपलब्ध है। इतना ही नहीं, हिन्दी में रोजगार की भी सम्भावनाएँ काफी बढ़ी हैं, जिसके चलते हिन्दी पढ़ने वालों की तादाद लगातार बढ़ती जा रही है। फिल्म, मीडिया, अध्यापन ही नहीं, प्रशासनिक क्षेत्रों में भी हिन्दी भाषी राज्यों के लोगों का चयन हिन्दी की ताकत का इजहार करते हैं। इसलिए हिन्दी को लेकर चिन्तित होने की नहीं, बल्कि अपनी भाषा पर गर्व करने और सरल एवं अच्छी हिन्दी लिखने की जरूरत है। आज के हिन्दी लेखक अगर अच्छी भाषा में उत्कृष्ट साहित्य रचें, तो यह हिन्दी को और ताकतवर बनाएगा।

भाषा के द्वारा ही मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। यह एक ऐसा साधन है जिससे मनुष्य अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। अपना देश भारत अनेक राज्यों में बंटा हुआ है। उन राज्यों में अपनी-अपनी भाषा है। इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है परन्तु भारत की अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी है। 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को यह गौरव प्राप्त हुआ। 26 जनवरी, 1950 को भारत का अपना संविधान हिन्दी भाषा के मदद से ही बना है। हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

आजादी के इतने वर्षों बाद भी हिन्दी को जो गौरवपूर्ण स्थान और सम्मान प्राप्त होना चाहिए था वह नहीं मिल पाया। अब यहाँ एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि हिन्दी को उचित सम्मान कैसे मिले? यद्यपि हम जानते हैं कि हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है, परन्तु हमारा चिन्तन आज भी विदेशी है। हम वार्तालाप करते समय अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करने में बहुत ही रूचि रखते हैं, वह भले ही अशुद्ध वाक्य क्यों न हो? हमें इस मानसिकता का परित्याग करना चाहिए और हिन्दी भाषा को बोलने में गर्व होना चाहिए।

हमें शासकीय कार्यालयों - बैंकों, रेलवे, वाणिज्य, विद्युत, संचार इत्यादि कार्यालयों में जहाँ भी कार्य करते हैं हमें हिन्दी में ही समस्त कार्य करने चाहिए। अदालतों की समस्त कार्यवाही भी हिन्दी में होनी चाहिए। हिन्दी का सम्मान करते हुए अपने कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को आवश्यक तौर पर अपनाया जाना चाहिए। ❑

पता : मकान नं0 24,
अयोध्या धाम कालोनी, लक्ष्मणपुर, शिवपुर,
वाराणसी, उ0प्र0
मो0 : 8840218049

किसी को भी अपने लिए दीवार न बनाये न खुद किसी की बाधा बने। जीवन को देखने के दो तरीके हैं। वह आपकी जिम्मेदारियों को पूरा करने के महत्त्व के बारे में हैं। चाहे वह धन, शक्ति या कुछ और हो, आप खुशी की खातिर इसमें जुट जाते हैं। कुछ लोग दुख का भी आनंद लेते हैं, क्योंकि इससे उन्हें खुशी मिलती है। किसी का सारा जीवन भविष्य में या किसी दिन खुश रहने की तैयारी में बीता है। हमने कितने मिनट, घंटे और दिन बिताए हैं? वे ही वे क्षण हैं, जिनमें आपने वास्तव में जीवन जिया है। जीवन को देखने के दो तरीके हैं। एक सोच है, मैं एक निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के बाद खुश रहूंगा। दूसरा यह कि मैं खुश हूं कि मैं क्या कर सकता हूं। हमारा जीवन एक नदी की तरह है। एक नदी का तट एक दिशा में अपने प्रवाह को निर्देशित करता है, लेकिन बाढ़ के दौरान पानी बिखर जाता है और दिशा खो देता है।

इसी प्रकार हमारे जीवन में ऊर्जा को प्रवाहित करने के लिए कुछ दिशा की आवश्यकता होती है। एक दिशा के बिना, यह सब बेकार है। आज, अधिकांश लोग असमंजस की स्थिति में हैं, क्योंकि उनके जीवन में दिशा का अभाव है। जब आप खुश होते हैं, तो आपमें जीवन ऊर्जा बहुत होती है, लेकिन जब यह जीवन ऊर्जा नहीं जानती है कि कहां जाना है, कैसे जाना है, यह अटक जाती है। जब यह स्थिर हो जाता है, तो यह घूमता है। नदी की तरह ही जीवन को गतिमान रखना है। जीवन ऊर्जा को एक दिशा में ले जाने के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है।और यह हमारे,ही विचारों से पैदा होती है। एक बार अपने अनुयायियों को विचार का प्रभाव समझाने के उद्देश्य से बुद्ध ने सभी को कुछ झाडियां सौप दीं कि इनका उपयोग करके मुझे सूचित करना। एक ने तो वह झाडियां जला दीं और उपयोग हेतु राख जमा कर ली। एक ने उसकी बाड बनाकर एक क्यारी में लगा दी। एक ने ऊपर चढ़ती लता को सहारा देने के लिए उपयोग में ली। एक ने उन झाडियों से छप्पर को ढक दिया। उन सबकी बात सुनकर बुद्ध ने कहा कि देखो यह जो हमारे विचार है यही हमें किसी चीज की उपयोगिता के बारे में बताते है। विचार ही बताते है कि हमारे पास हमेशा वह सब होता ही है जिसे हम जीवन कह सकते हं। आनंद, उदारता और अच्छा मन यह सब हमें जीवन के प्रति भरोसे के काबिल बना सकते हैं। ❑

पता : शुभम् विहार, आर.के.टेन्ट रोड,
कुसुम खेरा, हल्द्वानी-263139
नैनीताल
मो0 : 8302327123

अनमोल है माँ का प्यार

● लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

हमें याद आता है अपना गाँव
माँ की ममता की आँचल की छाँव
जब हम सर्वत्र होते हैं निराश
जीवन की न रहती है आस
हमको मिलता है यहीं पर ठाँव
बचपन से जहाँ बढ़ें हमारे पाँव...
जहाँ पर हम जन्म लिए
खेले-कूदे और पढ़े-लिखे
शहर की तरफ कदम बढ़े
शहर की आबोहवा लगते ही
अक्सर हम जाते हैं भूल
जहाँ शिक्षा ग्रहण किए वो प्राइमरी स्कूल
आधुनिकता का हम पर ऐसा छा जाता मकड़जाल
गाँव में रह रही माँ का न ले पाते हालचाल...
गाँव में वृद्ध अशक्त बापू को छोड़कर
शहर में हम चैन की बंसी बजाते हैं
जब हम पर कष्ट या मुसीबत पड़े
तो माँ और गाँव हमें याद आते हैं
फिर हम दौड़े चले आते हैं
तब याद आती है माँ की ममता व दुलार
बाबा-दादी, काका, चाचा, ताऊ का प्यार
गाँव के खेतों और खलिहान में बहती ठंडी बयार
हम भूल जाते हैं कि जननी और जन्मभूमि ही
जीवन का सबसे बड़ा होता है अनमोल उपहार
इनसे बढ़कर कोई न दे सका है
हमें निश्छल प्यार...

❑❑

पता : मोहल्ला-बरगदवा (नई बस्ती),
निकट गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट-मड़वा नगर (पुरानी बस्ती)
जिला-बस्ती 272002 (उ. प्र.)
मो. 7355309428

आपकी भाषा है आपका बच्चा

- मुग्धा

आजकल बच्चों की कल्पनाशीलता के ऐसे ऐसे उदाहरण देखने को मिलते हैं कि पूछो मत।एक सप्ताह पहले एक कालोनी के पार्क में बच्चे खेल रहे थे। तभी एक महिला उस पार्क में आई और बैच पर बैठ गई। एक बच्चे ने उनको देखकर कहा" ओ देखो गोभी आ गई।" दूसरा बोला ,"नहीं नहीं इनका नाम तो कददू है।" तीसरा कहने लगा," अरे नहीं नहीं हमारे घर पर तो इनको टुनटुन कहा जाता है।" वह तो अच्छा हुआ कि वह महिला फोन पर बात कर रही थी।वरना यह सब सुनकर उनको कितना मानसिक कष्ट होता। कुल मिलाकर उस महिला के बारे में जो भाषा घर पर प्रयोग की जा रही थी।उसी का प्रतिनिधित्व उन बच्चों ने कर दिया। ऐसा ही होता है। घर पर मजाक-मजाक में बरती गई भाषा से बच्चे का शब्दकोश बन जाता है। एक समय था कि जब माता-पिता ने कहा कि अगर हम किसी के साथ कुछ जुमले बोल रहे है तो तुमको ऐसा नही बोलना। तो बच्चे मान लेते थे। उसके अनेक उदाहरण भी है। खुद महान लेखक और चिंतक राहुल सांकृत्यायन जी ने अपने साक्षात्कार मे बताया है कि उनके नानाजी के घर पर रहकर उनका लालन-पालन हुआ शिक्षा दीक्षा हुई। वहां मजदूर और किसान अक्सर देहाती तथा अक्खड़पन से बोलते।उनके नाना और नानी भी उसी तरह बात करते।राहुल सुनते और बोलते।

मगर नानाजी उनको पहले ही समझा देते कि यह भाषा उन मजदूरों की भाषा है। मान लो कि मजबूरी की भाषा है। मगर तुम विद्यालय जा रहे बालक हो।तुम को शिक्षक की भाषा में बात करनी है।इसीलिए राहुल सांकृत्यायन जी की भाषा संयत और मधुर रही। पर यह दशकों पुरानी बात है।

यह आज के वातावरण में लागू नही हो सकती। आज रोबोट युग के बच्चे तो सीधा सीधा अभिभावक की भाषा को अपना लेते है।

आजकल माता पिता को अपने शब्दों का चयन समझदारी से करना इतना जरूरी हो गया है कि इसे अगर हल्के फुल्के ले लिया तो यह काफी चिंता का कारण बन सकता है। विख्यात मनोवैज्ञानिक थार्नडाइक ने बच्चों के भाषा संबंधित व्यवहार पर अनेक प्रयोग किये है।वह सभी आज भी सार्थक है। उनका यह सप्रमाण मानना था कि माता-पिता अधिकतर जैसे शब्द इस्तेमाल करते है। बच्चा भी उसी तरह से बोलने लगता है।जानी मानी मनोवैज्ञानिक एलिका बर्गलसन की अगुआई में हुए अध्ययन में यह पता लगाने की कोशिश की गई कि आखिर बच्चों के भाषा सीखने के तरीके और बोलने में विविधता कैसे जाती है। इस अध्ययन में सात साल की उम्र तक के दो हजार बच्चों को शामिल किया गया है और अंतरराष्ट्रीय मनोवैज्ञानिकों ने उनकी गहरी पड़ताल की हैरानी की बात यह पाई गई कि जो बच्चे कुछ देर के लिए या किसी अजनबी के सामने

अलग- अलग अंदाज में बोलना सीखते हैं उससे उनके आसपास के बहुत सारे बोलने वालो का प्रभाव, उनके सामाजिक आर्थिक परिवेश, बहुत सी भाषाओं से सामना, कोई कार्टून फिल्म देखना जैसी किसी भी बात से कुछ न कुछ संबंध था। मगर यह क्षणिक सा ही था। यानि कोई एक वाक्य या फिर समूह में प्रभावित करने को कोई लंबा सा वाक्यांश। मगर लंबी बातचीत करते हुए अथवा कोई विषय पढते हुए जो उनका बोलने का ढंग था यानि उसके तेवर थे उसमें हर हाल में यही पाया गया कि पारिवारिक असर ही था।यानि जो बच्चे मीठा और सरल तथा शांति से बोल रहे थे। उन्होंने यह सब बातें अपने घर के लोगों से ही सुनी थी। और जो झुंझलाकर बोल रहे थे। वह भी विरासत में ही मिला था। भाषा के विकास में और बात करने के तौर तरीके में आमतौर पर माता पिता की कमजोर आर्थिक दशा उनका सामाजिक परिवेश जिम्मेदार माना जाता है, जबकि इसका भाषा सीखने की क्षमता से कोई संबंध नहीं है। केवल माता पिता का आचरण और बातों में प्रतिक्रिया देने का सलीका ही जिम्मेदार है। इसके लिए उदाहरण के तौर पर उन गरीब घरों के क्रिकेटर को ले लीजिए जो बोलते समय कितने शालीन है। कुछ तो चाय बनाने वाले और रिक्शा चलाने वाले परिवार से भी है।मगर उनकी भाषा बताती है कि उनके घर पर शालीन माहौल रहा होगा। शोधकर्ताओं ने पाया कि जब बच्चे के पास ज्यादा बोलने वाले लोग होंगे तो उसकी भाषा सीखने की संभावना अधिक होगी। ऐसे में माता पिता और बच्चों के पास रहने वाले अभिभावक को गौर करना चाहिए बच्चो को ज्यादा से ज्यादा बोलने को बढ़ावा देना चाहिए। ऐसे में गौर करने वाली बात यह है कि जहां शहरों में बच्चों को बोलने के कम मौके मिलते हैं गांवों के संयुक्त परिवारों में बच्चों को तरह तरह से अपने बुजुर्गों को भी सुनने का मौका अधिक मिलता है जिससे उनके अच्छा और समझदारी भरा हुआ बोलने की संभावना अधिक ही होती है। अपने बच्चे की बोली और जुबान को सुसंस्कृत बनाने के लिए एक शानदार तरीका यह भी हो सकता है कि जब जब बच्चा किसी के उपनाम बोलना या रूखी बोली छोड़कर सभ्य भाषा का इस्तेमाल करने लगे, तो उसकी तारीफ करना बहुत महत्वपूर्ण है। उनकी प्रशंसा करने से उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा और वे अच्छा व्यवहार जारी रखने के लिए प्रेरित होंगे। उन्हें बताएं कि आपने क्या देखा और आपको उनकी सभ्य भाषा का इस्तेमाल कैसा लगा। जब वे अच्छा व्यवहार करते हैं, तो उन्हें छोटे-छोटे पुरस्कार दे सकते हैं। अगर अभिभावक उन्हें बताएं कि वह उनसे कितना प्यार करते हैं और उनकी कितनी परवाह करते हैं। तो बच्चे जागरूक होकर खुद सभ्य भाषा का इस्तेमाल करने लगेगा।

फिर भी यही एक सार्वभौमिक सत्य है कि जैसी अभिभावक का तरीका वैसा ही बालक का सलीका। माता पिता तथा अभिभावक का तकिया कलाम ही बच्चो का भी तकिया कलाम बन जाता है। इसका उदाहरण लौह महिला इंदिरा गांधी जी से लिया जा सकता है। इंदिरा गांधी जब इंदु हुआ करती थी।वह बचपन में अपनी बुआ कृष्णा पंडित तथा विजयलक्ष्मी पंडित की भाषा शैली से बेहद प्रभावित थी। जब बालिका इंदिरा यानि इंदु महात्मा गांधी जी से मिली तो उसका जज्बा देखकर गांधीजी दंग रह गये। जाहिर सी बात है कि भाषा और विचार उनको घर के वातावरण से ही मिले। लाल बहादुर शास्त्री एक गरीब परिवार के बालक थे।मगर उनकी भाषा में कभी वह भाव नही था।यानि उनके माता पिता धन दौलत से समृद्ध हो न हो उनकी भाषा एकदम सभ्य तथा सुसंस्कृत रही होगी।यह तो सौ फी सदी सच है। ❑

पता : डी-54, अण्डर ग्राउण्ड फ्लोर,
पर्यावरण काम्प्लेक्स, इग्नू रोड, साकेत,
न्यू दिल्ली-110030
मो0 : 7976037095

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भमिूका एवं महत्व

"उत्तम कृषि, मध्यम बान,
निकृष्ट चाकरी, भीख निदान"

भारत में कृषि व्यवस्था सामाजिक और आर्थिक जीवन का सबसे प्रभावी सूत्र है। यह सर्वाधिक व्यापक जननांकी क्षेत्र पर प्रभाव डालती है। भारत के सभी सभी पर्व (धार्मिक या राजनीतिक), उत्सव कृषि पर आधारित है। बौद्ध धर्म में भी इसे अन्नदा और सुखदा कहकर इसकी महत्व को स्वीकार किया गया है। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि प्राचीनकाल से ही कृषि हमारी अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। देश में कृषि की प्रधानता रही है और कृषि ही हमारी अर्थव्यवस्था के धुरी रही है। "भारत के विकास का मार्ग खेत और खलिहानों से होकर गुजरता है" -पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह

भारतीय कृषि का वर्तमान स्वरूप-

भारत एक कृषि प्रधान देश है, यहां 70 प्रतिशत आबादी अभी भी गांव में बसती है। जिसकी मुख्य जीव का कृषि पशुपालन तथा कृषि से संबंधित अन्य साधन है। 1950 से 1951 में जीडीपी में कृषि की भूमिका 56 प्रतिशत के आसपास रही जबकि 2024 में कृषि का योगदान जीडीपी में महज 15 प्रतिशत है। इसके बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की प्रभावी उपस्थिति बनी हुई है।

अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व का कारण -

आज भी भारत की कार्यकारी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा रोजगार के लिए कृषि पर ही निर्भर है। कृषि भारत में जीवन निर्वाह का बड़ा माध्यम है। देश की 80 प्रतिशत जनसंख्या का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि क्षेत्र में रोजगार करना आज भी भारत में कृषि पर निर्भर है। यह श्रम शक्ति के लगभग 55 प्रतिशत का रोजगार उपलब्ध करवाती है। उदर पूर्ति के कारण कृषि को सम्मान सूचक शब्द कहा जाता है। रोजमर्रा के अनेक वस्तुओं की आपूर्ति कृषि द्वारा ही होती है। केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि पालतू जानवरों के लिए चारा आदि भी हमें कृषि से ही प्राप्त होता है। फल स्वरूप हमें पशुओं से दूध,

अनुराधा वर्मा
सहायक विकास अधिकारी(सहकारिता)

दही घी जैसी उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं। अतः हम कह सकते हैं कि कृषि न सिर्फ हमारे देश की अर्थव्यवस्था का आधार है बल्कि जीवन का भी आधार है।

उद्योग क्षेत्र में कृषि की उपयोगिता -

कच्चे माल की आपूर्ति कृषि क्षेत्र से होती है। अनेक उद्योग सीधे कृषि उत्पादों पर आधारित होते हैं,जैसे बागान, डेरी उद्योग, चीनी उद्योग आदि कुछ ऐसे उद्योग भी है जिन्हें परोक्ष रूप से कृषि पर निर्भर देखा जा सकता है। निर्माण क्षेत्र में होने वाली आय का लगभग 50 प्रतिशत हिस्सा हमें कृषि क्षेत्र से प्राप्त होता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग तेजी से बढ़ रहे हैं, जो किसी क्षेत्र से ही संबल प्राप्त करते हैं, साथ ही साथ देश के परंपरागत उद्योग भी इसी पर आधारित हैं।

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार क्षेत्र में भारतीय कृषि की प्रासंगिकता -

भारत कृषि उत्पाद, भारत के 10 बड़े निर्यातकों वस्तुओं में शामिल है। भारत के निर्यात में कृषि उत्पादकों की बहुलता जैसे मसाला, चाय, काफी, जूट, कपास आलू तथा अन्य सब्जियां, आदि है। भारत कृषि से बनी वस्तुओं के भी बड़े निर्यातक हैं। कृषि का हमारे निर्यात में कुल लगभग 15 प्रतिशत का योगदान है, क्योंकि हमारे निर्यात अच्छे स्तर व अच्छे गुणवत्तापूर्ण है, अतः इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर

पर जहां हमारी छवि अच्छी बनती है, वहीं भारत की ख्याति भी बढ़ती है। कृषि उत्पादकों निर्यात से भी हमें अच्छा राजस्व भी प्राप्त होता है, जिससे अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है। यह निर्यात हमें विदेशी मुद्रा दिलवाता है, जो की एक अच्छी अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक है।

कृषि क्षेत्र से राजस्व लाभ -

सरकार को कृषि के द्वारा एक अच्छी खासी आय प्राप्त होती है ,जो की मालगुजारी, कृषि कर, सिंचाई कर, कृषि संपत्ति कर आदि के द्वारा मिलती है। परिवहन उद्योग विकसित करने में भी कृषि की महत्वपूर्ण भूमिका देखी जा सकती है जैसे रेल तथा सड़क मार्ग को मजबूत तंत्र विकसित करने का आध ाार कृषि ही रहा है। जिससे कृषि तथा हमारी अर्थव्यवस्था को नए आयाम मिले हैं। 1958 में कृषि के महत्व को स्वीकार करते हुए प्रशासनिक समिति ने यह कहा था कि "कृषि ही सभी उद्योगों की जननी है और मनुष्य को जीवन प्रदान करने वाली है" अर्थात भारतीय अर्थव्यवस्था हो या भारतीय जनजीवन सभी के सभी कृषि के इर्द-गिर्द ही चक्कर काटते नजर आते हैं।

भारतीय कृषि के कमजोर पक्ष -

यद्यपि आज भी भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहां की अर्थव्यवस्था की निर्धारक कृषि ही है किंतु विगत कुछ वर्षों में भारतीय कृषि के क्षेत्र में कुछ चिंतनी पक्ष भी उभर कर आए हैं, जिसे हमने बिंदुओं पर देख सकते हैं।

- राष्ट्र की आय में कृषि की घटते हिस्सेदारी
- काम करने वाले लोगों तथा औसत आय का अंतर बढ़ता जा रहा है।
- वही उद्योगों में कृषि का महत्व बहुत कम हुआ है।
- कुछ ऐसे उद्योग भी स्थापित हुए हैं जिनका कृषि पर जिनकी कृषि पर निर्भरता नहीं है, जैसे आईटी सेक्टर, लोह अयस्क आदि।
- निर्यात में आए विविधीकरण से निर्यात में कृषि का योगदान कम होना।
- 1950 -51 में निर्यात में कृषि का योगदान 50 प्रतिशत था जबकि 2024 में यह लगभग 12 प्रतिशत है।

भारतीय कृषि के समक्ष प्रमुख चुनौतियां -

भारतीय कृषि के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती भारतीय कृषि को मानसून का जुआ कहा जाता है, कृषि उत्पादन की रूढ़िवादी तकनीकी तथा कृषि में बेरोजगारी की अधिकता है। कृषि की अन्य प्रमुख समस्याएं कृषि जोतों का आकार छोटा होना, समस्या ग्रस्त कृषि स्वरूप जिसमें - घटिया बीज उर्वरक का काम प्रयोग, सिंचाई की कमी, मृदा अपरदन, रोगों एवं कीटों का प्रकोप, पूंजी की कमी, भूमि की उर्वरकता में गिरावट, पशुओं की सोचनीय दशा, भूमि सुधारकों की कमी, अशिक्षा एवं बेरोजगारी, संगठित ऋण की अनुपलब्धता, भंडार गृहों की कमी, खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों की कमी,एमएसपी का उचित प्रति ना हो पाना इत्यादि भारतीय कृषि की अन्य प्रमुख समस्याएं हैं।

कृषि क्षेत्र के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के समाधान हेतु किया जा रहे हैं प्रयास -

कृषि क्षेत्र को प्रोत्साहन देने के लिए केवल योजनाएं ना बनाई जाए ,बल्कि उसका उचित तरीके से क्रियान्वयन भी सुनिश्चित किया कराया जाए द्य उदाहरण के तौर पर वर्तमान सरकार ने समय-समय पर किसानों के हित के लिए तथा कृषि क्रिया को लाभकारी बनाने के लिए अनेक योजनाओं का निर्माण किया है लेकिन इन योजनाओं का वांछित लाभ तभी मिल सकता है, जब इसका बेहतर तरीके से क्रियान्वयन हो सके। हमारी सरकारों ने किसानों के हित के लिए अनेक योजनाओं का निर्माण किया है। इन योजनाओं में प्रमुख योजनाएं निम्नवत देखी जा सकती हैं। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, मौसम आधारित फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना, प्रधानमंत्री किसान मानधन योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, पीएम किसान कृषि सिंचाई योजना, राष्ट्रीय कृषि मंडी, कृषि वानिकीय उपमिशन, राष्ट्रीय कृषि वानिकी नीति, आदि। इसके अलावा बजट आवंटन में अभूतपूर्व वृद्धि, कृषि क्षेत्र के लिए संस्थागत ऋण की उपलब्धता, देश में जैविक खेती को बढ़ावा देना, प्रतिबूंद अधिक फसल, सूक्ष्म सिंचाई कोष इत्यादि कृषि को मजबूती देने हेतु उठाए गए प्रमुख कदम है। उपरोक्त के अलावा निम्नलिखित कुछ ऐसे प्रयास है जिनका अपना

करके भारतीय कृषि को लाभकारी बनाया जा सकता है-

- कृषि क्रिया में निरंतर हेतु कृषि आय में स्थायीत्व लाना।
- किसानों को उचित कृषि उत्पादों का वाजिब मूल्य प्रदान करने के लिए सरकार द्वारा कदम उठाया जाए।
- अुषि क्षेत्र में एक संस्थागत साख सुनिश्चित की जाए।
- शोधों पर ज्यादा ध्यान दिया जाए तथा कृषि अनुसंधान खर्च को बढ़ाया जाए।
- किसानों को जागरूक तथा शिक्षित किया जाए ताकि वह कृषि की रूढ़िवादी तकनीक तथा परंपरागत कृषि को छोड़कर नई तकनीक को अपनाए।
- कृषि को लाभकारी क्रिया के रूप में लाने हेतु कीटनाशकों व उर्वरकों आदि का समुचित व्यवस्था किया जाए तथा इनके प्रयोग हेतु भी किसानों को नई तकनीक के अनुसार जागरूक किया जाए, जैसे कि नैनो उरिया, नैनो डीएपी का उचित ढंग से प्रयोग।
- नई तकनीक तथा नए कृषि पद्धति से कृषि तथा किसानों को जोड़ा जाए।

निष्कर्ष-

कृषि हमारा मूल आधार रही है। तभी तो यह कहा जाता है कि आर्थिक जीवन एक वृक्ष के समान है, जिसकी जड़ कृषि है, उद्योग उसकी शाखा है तथा पत्तियां व्यापार के समान है। हमें अपने देश की नीतियों का निर्धारण करते समय इस कहावत का ध्यान रखना चाहिए जब हमारी जड़े मजबूत व गहरी होगी तभी ऊपर का वृक्ष भी हरा- भरा रहेगा। अतः उदारवाद तथा बाजारवाद से इतिहात बररते हुए उन नीतियों को प्रोत्साहित करना होगा जो विशेष रूप से कृषि को प्रोत्साहित करें तथा यह समझना होगा कि जब कृषि होती है तभी अन्य कलाएं भी पनपति हैं। अर्थात अर्थव्यवस्था तभी प्रगति कर सकती है जब हम कृषि की अनिवार्यता को समझ कर उसके अनुरूप नीतियों का निर्माण करेंगे। अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों के ही तरह कृषि को भी साथ में लेकर चलने से ही भारत राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक सशक्त पहचान बन सकेगा साथ ही साथ में भारत का विश्व गुरू बनने का सपना भी सरकार हो पाएगा। ❑❑

यह जीवन एक, इमारत है।

यह जीवन एक,
इमारत है।
हर इक सीढी पर
रंगत है।
रंगत है
सीढी चढने की,
चढने की,
अनुभव पाने की,
यह जीवन इक,
मैदान है।
जिसमें फैला है
हरी घास,
ये हरी घास
इच्छाओं की,
चाहत की,
कामनाओं की,
यह घास
फैलती जाती है ।
जब जीवन,
अनुभव पाता है,
सीढी पर,
रूककर चढता है,
औरए हरी घास को,
कहता है,
मत फैलो मेरी,
इचछाओ,
अब रूक जाओ,
अब थम जाओ,
जीवन
अनुभव की
गठरी है,
इस गठरी में,
कुछ किस्से हैं,
हर किस्से में
इक सीख भरी,
इन सीखों की
ही छाया में,
फिर जीवन,
चलता रहता है,
कुछ इसे,
बुढ़ापा कहते हैं।
पर जीवन,
खिलता रहता है।
संतुलित रहे
हर सांस सांस तो
जीवन फलता रहता है। ❑

● संदीप पांडे
'शिष्य'

पता :
दुर्गेश पुष्कर रोड, कटरा,
अजमेर-305004
राजस्थान
मो0 : 9414070143

‘सहकारिता’
पत्रिका के नियम

1. सहकारिता मासिक पत्रिका है। इसका प्रकाशन हर महीने के तीसरे सप्ताह में होता है।
2. सहकारिता का उद्देश्य सहकारिता तथा विकास सम्बन्धी योजनाओं और समाचारों का प्रचार करना, सहकारिता के उद्देश्य और उपयोग से जनता को परिचित कराना तथा देश की आर्थिक समृद्धि के लिये प्रेरित करना है।
3. इसका वार्षिक मूल्य रू0 150.00 तथा आजीवन सदस्यता के लिए रू0 1500.00 मात्र है।
4. प्रकाशन, विज्ञापन, ग्राहक और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र-व्यवहार सम्पादक सहकारिता पो.बा. नं. 136 लखनऊ से करना चाहिए।
5. सहकारिता में प्रकाशित रचनाओं में प्रकट किये गये विचारों से पूर्णतः अथवा अंशतः सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
6. सहकारिता पत्रिका के न मिलने की सूचना सम्पादक को मास के भीतर मिलनी चाहिए अन्यथा दूसरी प्रति भेजना सम्भव न होगा।
7. सहकारिता में प्रकाशनार्थ सामग्री-लेख समाचार आदि कागज मे एक ही ओर लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

सम्पादक
सहकारिता
पोस्ट बाक्स नं0 136
लखनऊ-226001

‘सहकारिता’ पत्रिका हेतु विज्ञापन की दरें

1-doj i`"B	:0	15]000-00
2-fof'k"V foKkiu ¼vkVZ isij ij½	:0	10]000-00
3-lk/kkj.k i`"B	:0	5]000-00
4-vk/kk i`"B	:0	3]000-00
5-pkSFkkbZ i`"B	:0	1500-00

‘सहकारिता’ साप्ताहिक एवं मासिक का शुल्क

❑ एक प्रति-सहकारिता साप्ताहिक	रू0	3.00
❑ एक प्रति-सहकारिता मासिक	रू0	15.00
❑ वार्षिक-सहकारिता साप्ताहिक	रू0	150.00
❑ वार्षिक-सहकारिता मासिक	रू0	150.00
❑ सहकारिता साप्ताहिक (आजीवन)	रू0	1500.00
❑ सहकारिता मासिक (आजीवन)	रू0	1500.00
❑ साप्ताहिक एवं मासिक संयुक्त (आजीवन)	रू0	3000.00

प्रबन्ध निदेशक, यू.पी. को आपरेटिव यूनियन लि0 14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग, लखनऊ के पते पर शीघ्र मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बनें।

वी0पी भेजने का नियम नहीं है।

कृपया पत्र- व्यवहार निम्न पते पर करें:-

सम्पादक
सहकारिता
यू.पी. कोआपरेटिव यूनियन लि0
14, डा0 भीमराव अम्बेडकर मार्ग,
लखनऊ-226 001.

SAHKARITA
September - 2024

RNI No.-13466/1963
Postal Regd. No. GPOLW-NP/181/2024-26
Total No of Page - 44
Postal Date : 18 & 19 Every Month

सहकारिता के सिद्धान्त

स्वैच्छिक और खुली सदस्यता

प्रजातांत्रिक सदस्य–नियंत्रण

सदस्य की आर्थिक भागीदारी

शिक्षा प्रशिक्षण और सूचना

स्वायत्तता और स्वतंत्रता

सहकारी समितियों में परस्पर सहयोग

सामाजिक कर्त्तव्य बोध